साप्ताहिक

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

समय माया

R.N.I. No.: MP/HIN/2006/20685

प्रधान संपादक- अजमेरा एस.पी. कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Webite: www.samaymaya.com
Email: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

Cell: +91 9425125569
+91 9479535569

(C) All Copyrights reserved with chief editor, do not publish any matter without prior written permission

In case of any dispute, may be solved only in Indore Court Jurisdiction

वर्ष 17 अंक 14 प्रति सोमवार इंदौर, 6 से 12 नवंबर 2023 पृष्ठ 8 मूल्य 2/- रुपए

देश की अर्थव्यवस्था छोटे व्यापारियों उद्योगों के हाथ में भी

छोटे व्यापारियों-दुकानदारों से कीजिए खरीदी

सबका कर्तव्य छोटो को रोजगार दीजिए और परस्पर समृद्धि दीजिए

त्योहारों के मौसम में कोशिश कीजिए आपकी खरीदी से छोटे व्यापारियों उद्योगों को प्रोत्साहित करने उन्हें रोजगार देने जो हमारे जीवन बाजार और देश की अर्थव्यवस्था का आधार है। से खरीदी करें शॉपिंग मॉल ऑनलाइन खरीदी बड़े दुकानदारों से खरीदी करने से बचें। जो जितना बड़ा विज्ञापन दे रहा है वह उतना बड़ा डकैत और लुटेरा भी है आखिर उस पैसे को ग्राहकों से ही लूट कर तीन-चार पेज के विज्ञापन देकर आपको आकर्षित करने भ्रमित करने 20-40₹ के रत्न हीरों पन्ने नीलम माणिक आदि के आभूषणों में अगर उन्हें आप से छल कपट कर लिया तो सोचिए आपके पास कितने का माल गया है? दूसरी तरफ छोटे व्यापारी छोटे उद्योग कम लाभ में आपकी ज्यादा सेवा देने के साथ आपको उधार देने आपकी बातों को और आपका मान सम्मान करने कीमतें कम करने अच्छी सेवा देने का कार्य भी करते हैं उनका भी ख्याल रखिए।

पूरी भाजपा मोदी-योगी-शिवराज सिंह से लेकर नीचे तक अमेरिकी चीनी देशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों पूंजीपतियों से मोटा कमीशन लेकर मोदी ने आते ही साथ विश्व घातक संगठन व उनके अमेजॉन वॉलमार्ट के साथ अडानी अंबानी टाटा बिरला आईटीसी यूनि लीवर आदि सेकडों पूंजी पतियों के इशारे पर नाच कर जिसमें पहले सफाई के नाम पर पूरे देश में लगभग 2 करोड़ ठेले वाले व पग मार्गों पर सड़क किनारे सब्जी फल फूल व अन्य सामग्री बैंचने नोकिया वालों को पूरे देश के निगम भोपाल का कर्मचारियों ने लगभग 1 करोड़ ठेले तोड़ मारपीट सामान लूटकर आर्थिक रूप से कमर तोड़ कर साफ किया। बाद में नगदीहीन या केशलेस व्यवस्था के नाम पर खरीदारों जनता के क्रेताओं आदतों की आदतों, रहन-सहन का कमाई व खर्च करने का स्तर का डाटा इकट्ठा करने खरीदारी की व्यवस्था जानने आदि के लिए यह व्यवस्था थोपी गई। इससे भी छोटे व्यापारी कई महीने परेशान हुए और उनकी बेरोजगारी का फायदा इन हरामखोर चांडाल बहुराष्ट्रीय कंपनी वालों ने

उठाया।

उस चांडाल राक्षस मोदी व उसके डकैत जालसाज पूंजीपति मित्रों का इससे भी पेट नहीं भरा। तो लाखों करोड़ के नोट इकट्ठा करने नोट छपाने मैं मोटी कमाई करने के लिए उस जालसाज ने हीं काले धन और आतंकवादियों के नाम पर छोटे व्यापारियों, उद्योगों दुकानदारों बाजारों, उद्यमियों की आर्थिक रूप से कमर तोड़ने नोटबंदी का षड्यंत्र किया और 6 महीने तक लगभग 60 करोड लोगों को बेरोजगार कर दिया। और जनता को झूठे वादे कर दिलासा देता रहा। बस 50 दिन सब कुछ ठीक हो जाएगा परंतु आज तक उससे छोटे उद्योग और नहीं पाए थे कि उसने नया षड्यंत्र जीएसटी का लगा दिया। एक देश एक करके होने के बाद में भी उसने सबसे खास पेट्रोल डीजल गैस के साथ शराब पर 7 साल गुजर जाने के बाद जीएसटी नहीं ठोका। जालसाज न केवल केंद्र बल्कि राज्य सरकारें भी मनमानी 32 केंद्र+36 मध्य प्रदेश सरकार+ 16% अतिभार या सेस की वसूली कर रही हैं। और रु. 20 की पेट्रोल को जिसमें 30 से 40% रु. 5 लीटर का एथेनॉल मिला रहता है 110 रुपए से 125 तक वसूल कर रही है। दूसरी तरफ अधिकतम 18% जीएसटी की बात की थी। जो 28% तक वस्तुओं व सेवाओं पर लगाया जा रहा है। इसके साथ ही जिस कांग्रेस के जमाने में वेट लगभग ढाई सौ वस्तुओं को लगता था इन डकैतो ने लगभग 1500 वस्तुओं और सेवाओं पर कर लगाकर रोटी और कफ़न तक पर भी ठोक दिया। और वह इतना आपवादिक व क्लिष्ट बनाया गया की लगभग ढाई हजार दिन में उसमें छोटे व्यापारियों उद्योगों विक्रेताओं को खत्म करने 6000 से ज्यादा संशोधन कर दिए गए।

(शेष पेज 6 पर)

भाजपा के पाखंडी नौटंकीबाज नेता जनता को बताएं

अगर 70 साल से श्रीराम नहीं थे तो फिर कैसे प्रकट हो गए अचानक

राम, राष्ट्रवाद, हिंदूत्व, हिंदूराष्ट्र, स्वदेशी, अच्छे दिन, महंगाई, 15 लाख खाते में सब चुनावी वादे

फिर बाबा काशीनाथ बाबा महाकाल कारीडोर को व्यवसायिक पर्यटन स्थल बनाने मोटी कमाई करने और हिंदुओं को हिंदू धर्म से दूर करने दर्शन के भी भारी-भरकम फीस रखकर मोटी कमाई करने भ्रष्टाचार से लूट का अड्डा बना अकेले काशी में 1200, हजारों साल पुराने मंदिर, मठ, आश्रम समाधिया तोड़कर कमाई का अड्डा कैसे बना दिया?

फिर अंध भक्तों श्री राम को सत्ता का हथियार समझ जनता को भ्रमित कर सत्ता हथिया कर आदि पुरुष के नाम से जो फिल्म बनाई थी। जिसमें श्री राम श्री बजरंगबली व अन्य सभी देवों से जनता को

भ्रमित करने, पीछा छुड़ाने अब जब इनको लगा कि अब श्री राम के नाम से सत्ता नहीं मिलेगी, तो इनका श्रीराम के नाम से भी मोहभंग हो गया, तो श्रीराम से पीछा छुड़ाने इसलिए श्रीराम को गाली बकी खुलेआम हिंदू सनातन धर्म का अपमान किया गया। निर्माता व संवाद लेखक मनोज मुंतशिर की औकात है, तो कोई अगली फिल्म बनाकर मुस्लिम धर्म के खिलाफ इस प्रकार की बदतमीजी दिखाने की हिम्मत दिखाओ सिर धड़ से अलग कर देंगे। (शेष पेज 7 पर)

साप्ताहिक समय माया

संपादकीय

सत्ताधीशों के लिये रीढ़ास्थिविहीन प्रशासन

चुनाव आयोग में बैठाया आयुक्त कठपुतली के रूप में बैठाए जाने के साथ वह पूरी तरीके से सरकार सत्ताधीशों के नीचे से लेकर ऊपर तक सारे नेताओं को पूरे कानूनों का उल्लंघन करने, पानी करने गलत फॉर्म भरने अपनी संपत्तियों, अपराधिक प्रकरणों को छुपाने की की छूट देकर आंख खींच कर चुपचाप सब कुछ जानकार भी पूरी छूट देता है परंतु दूसरी तरफ निर्दलीयों और छोटे दल के उम्मीदवारों को हर तरह से परेशान करने खेल से बाहर करने मैदान से हटाने का भी कानून की आड़ में डरा धमकाकर बैठने नमक्कल निरस्त करने या फॉर्म वापस लेने का जवाब डालने का भी खेल करता है। सत्ताधीशों के इशारे पर नाच कर वह खेल मतदाता सूची में ढेर सारे फर्जी मतदाता भरने विपक्ष की पार्टी के समर्थकों को बाहर करने नाम काटने मत जाता सूची में जानबूझकर गलतियां करने की दाल शादी से शुरू हुआ या खेल चुनाव की वोटो की गिनती तक निर्वात प्रशासनिक अधिकारी कर्मचारी सट्टा देश के लिए खुलकर करते हैं पूरी दुनिया में कहीं पर भी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से चुनाव नहीं होते भारत में जालसाजी करने जितने सत्ता है जाने के लिए यहां एवं चुनाव करवाए जाते हैं जनता की आवाज दबाने के लिए सत्ताधीशों के गुंडे बदमाश लठैतों से लेकर और यहां तक की सर्वोच्च न्यायालय तक नहीं सारे तथ्यों की अनदेखी कर जबरदस्ती बीवी से चुनाव करवाने के लिए जो न केवल जीपीआरएस जीपीएस वाई-फाई ब्लूटूथ सबसे ऑपरेट हो सकती है और होती है जानबूझकर चुनाव के बाद 10 से 15 दिन तक उन मशीनों को मतदान केंद्रों पर संग्रहीत करने और बदलने का खेल किया जाता है। से लेकर जानबूझकर सारे फर्जी डाक मतपत्रों तक को भी बिना उम्मीदवारों को दिखाएं सारे के सारे सत्ताधीश पार्टी के उम्मीदवार को दिखा दिए जाते हैं। गिनती के समय भी जब उम्मीदवारों को बताया जाता है की हर कक्ष की सारी मशीन एक कंप्यूटर स्क्रीन से एक दूसरे से जुड़ी हुई है सारी मशीन खोलते ही उसके वोटो की कुल संख्या, उम्मीदवारों के वोटो की संख्या प्रिंटर से जुड़ी हुई है उम्मीदवार को उसके हर पोलिंग बूथ पर मिले वोटो का प्रिंटेड फॉर्मेट दिया जाएगा हर मशीन का हर कक्ष का संकट आंकड़े मिलने के साथ सारे सारे बच्चों की हर विधानसभा क्षेत्र के अनुसार आपको संस्कृत कुल अंकों की जानकारी मिलती रहेगी। पहुंचने के बाद सारे कर्मचारी अधिकारी मशीनों को खोल खोल के उनकी गिनती अपने हाथ से लिख रहे थे वह गिनती आखिरी में जाकर संकलित कर हर मशीन और हर उम्मीदवार के हिसाब से दिया जाता है। न हीं हर मशीन के हर राउंड की ना एकीकृत सभी कक्षाओं की जानकारी संकेत होती है मैं संस्कृत बोर्ड संस्कृत की जाते हैं ना गिनती होती है ढंग से सब मनमानी तरीके से प्रशासन सत्ताधीशो के इशारे पर नाच कर कोशिश करता रहता है आखिर एवं से चुनाव क्यों करवाए जाते हैं एवं क्यों नहीं हटाई जाती है कागज के मत पत्रों से चुनाव नहीं करवाई जाती में एवं से चुनाव में हर स्तर पर न केवल वोट डालने पोलिंग बूथ पर मनमानी तरीके से सत्ताधीशों के लठैतो द्वारा न केवल पीठासीन अधिकारी को डरा धमका कर वोटिंग करवाई जाती है मशीन बदली जाती हैं संग्रहित कर आसानी से जीपीआरएस जीपीएस डब्ल्यू एल एल वाई-फाई ब्लूटूथ के कोड से मिलाकर आसानी से हमको बदल जाता है गिनती के समय भी पूरा सिस्टम जालसाजी पूर्ण होकर गिनती और घोषणा में भी जालसाजी की जाती है अर्थात वह शिक्षित अधिकार संपन्न प्रशासनिक अधिकारी सारे कानून को ताक पर रखकर रीढ अस्थि विहीन हो, पानगुवां जिसकी लाठी उसकी भैंस बनकर हंकता रहता है।

क्यों छुपा रहा दुनिया का बिकाऊ जालसाज मीडिया विश्व घातक संगठन के इशारे पर

बिल गेट्स को तय समय से पहले GITMO में दी गई फाँसी

एआइ से पूर्व की फोटो वीडियो बना षड़यंत्रकारी मीडिया जीवित बता रहे

दुनिया को कंप्यूटर क्रांति और सॉफ्टवेयर विकसित करने वाला, इंटरनेट की क्रांति लाने वाला माइक्रोसॉफ्ट का बिल गेट वन वर्ल्ड ऑर्डर के अंतर्गत दुनिया की आबादी को 25% तक लाकर सभी देशों के प्राकृतिक मानव निर्मित संपत्तियां उद्योगों स्रोतों पर कब्जा करना चाहता था उसी का षड्यंत्र था कोरोना, जिसका तांडव पूरी दुनिया में 28 महीने में 75% आबादी को खत्म कर अपने षड्यंत्र को अंजाम देना था। अभी बच्चे जाने पर बीमारी से रक्षा के नाम पर जबरदस्ती अपने मॉडर्ना के टीके से ठोककर, विभिन्न प्रकार की बीमारियां देकर कमजोर करना, ताकि भविष्य में अमेरिकी कंपनियों की बीमारियों को ठीक करने दवाइयां बिक सकें आबादी को नपुंसक बनाकर प्रजनन खत्म कर संसाधनों पर कब्जा जमाना था। सभी विकसित और विकासशील देशों की सरकारों को मोटा पैसा बांटा गया था इस षड्यंत्र को पूरा करने के लिए, जिसमें अमेरिकी ट्रंप प्रशासन के साथ वाइडेन प्रशासन भी शामिल हो गया। भारत के साथ विश्व के अधिकांश विकास की श्रेणी में शामिल व विकसित राष्ट्रों के स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ वहां के औषधि एवं खाद्य मंत्रालय को को भी मोटा धन बांट अपने आपको पूरा करने का खेल खेला गया। भारत के की सरकार व खाद्य व औषधि प्रशासन के भूखे भेड़ियों के बारे में तो कुछ कहना बेकार ही है।

परंतु मॉडर्ना फैक्ट्री के टीके ठोकने से अकेले अमेरिका में ही मई 2021 में 72 घंटे के अंदर ही लगभग 7000 में मेरीन कॉर्प्स कि अकाल मृत्यु हो जाने, बिल गेट की पत्नी मिरिंडा गेट द्वारा तलाक दिये जाने के बाद बिल गेट की एफ आई आर जिसमें उसने युवा निर्धन स्त्रियों पुरुषों के साथ वीभत्स यौनाचार करने मानव तस्करी के आरोप लगाए थे में पूर्व से ही पुलिस को की तलाश थी। जिसमें उसे उसके घने जंगल में बने फार्म हाउस की धरती के अंदर बन बंकर से 27 जुलाई 2021 को गिरफ्तार कर लिया था। बाद में उसके आरोपों को सही पाते हुए 5 अक्टूबर 2021 को फांसी की सजा तय कर दी गई थी। इसके बारे में निम्न अनुसार अमेरिकी साइट का विवरण है।

माइकल बैक्सटर द्वारा - 1 अक्टूबर, 2021

Source
realrawnews.com
https://realrawnews.com/2021/10/bill-gates-hanged-at-gimo-ahead-of-schedule/

शुक्रवार 1 अक्टूबर, 2021 की सुबह दोषी हत्यारे और माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स को एक आश्चर्यजनक जागने की चेतावनी मिली जब अमेरिकी मरीन ने उनके कैंप डेल्टा सेल में प्रवेश किया और उन्हें सूचित किया कि जेएजी ने उनकी फांसी की तारीख को 5 अक्टूबर से तत्काल बाद के लिए निर्धारित कर दिया है। पुनर्निर्धारण का कोई कारण बताए बिना, उन्होंने गेट्स को बताया कि जल्द ही उन्हें जीआईटीएमओ के दक्षिणी किनारे पर नव निर्मित फांसी के तख्ते तक ले जाने के लिए एक निष्पादन विवरण आएगा, जहां अन्य खूंखार अपराधियों को जल्लाद का फंदा मिला था।

'हमने सिर्फ आपके लिए एक नया निर्माण किया है,' एक गार्ड ने कथित तौर पर गेट्स को ताना मारा। जीआईटीएमओ के एक सूत्र ने रियल रॉ न्यूज़ को बताया कि गेट्स ने अंतिम भोजन से इनकार कर दिया, और एक घंटे बाद, जैसे ही सूरज क्षितिज पर नज़र आया, गेट्स को एक समाशोधन में ले जाया गया जहां वास्तव में जीआईटीएमओ के दोषियों को समायोजित करने के लिए नई फांसी का तख्ता बनाया गया था।

कलाइयों में हथकड़ी लगी हुई, गेट्स हुमवी से लात मारते और चिल्लाते हुए निकले और सेना पर अपने ही वादों को धोखा देने का आरोप लगाया। 'तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते। मेरे पास चार दिन और हैं. आपने मुझसे झूठ बोला! मैं बात करना चाहता हूं कि यहां का प्रभारी कौन है! मैं इसकी मांग करता हूं,' गेट्स ने भीड़ लगाई।

अमेरिकी नौसेना जज एडवोकेट जनरल के कोर के रियर एडमिरल डारसे ई. क्रैन्डल के नेतृत्व में निष्पादन विवरण ने गेट्स को अप्रिय समाचार दिया।

'फिटनेस फेंकना बंद करो और एक आदमी की तरह बाहर जाओ,' रियर एडमिरल क्रैन्डल ने कहा। 'सजा की तारीखें अनंतिम और सशर्त हैं और बिना किसी सूचना के परिवर्तन के अधीन हैं। आपको एक घंटे का नोटिस मिला है. यह बकवास जारी रखो और हम तुम्हें बेहोश कर देंगे - फिर फांसी पर लटका देंगे। क्या आप अपने निर्माता से इसी तरह मिलना चाहते हैं?'

हमारे सूत्र ने कहा, पहले डीप स्टेट निष्पादन के विपरीत, उपस्थिति में कोई नागरिक या राजनीतिक दूत नहीं थे, केवल सैन्य अधिकारियों की एक छोटी सभा थी।

गेट्स को मंच पर ले जाया गया, और एक सैनिक जिसकी वर्दी में नेमटैग, रैंक और प्रतीक चिन्ह का अभाव था, फिट किया गया और उसने गेट्स की गर्दन के चारों ओर फंदा कस दिया। नौसेना के एक पादरी ने अंतिम संस्कार करते हुए कहा कि उन्हें उम्मीद है कि गेट्स को अगले जीवन में मुक्ति मिलेगी।

रियर एडमिरल क्रैन्डल ने पूछा कि क्या गेट्स के पास कोई अंतिम शब्द थे।

गेट्स ने कहा, 'मैं अपने खिलाफ लगाए गए सभी आरोपों में निर्दोष हूं।' 'मेलिंडा झूठी है। मैं अच्छा आदमी हूं। मैं दानशील हूं और मैंने हमेशा कानून का पालन किया है। हां, मुझे 1975 में और फिर 1977 में बिना लाइसेंस के गाड़ी चलाने और तेज गति से गाड़ी चलाने के लिए गिरफ्तार किया गया था, लेकिन वे मौत की सजा के लायक नहीं हैं-'

'मैंने पूछा कि क्या आपके पास कोई आखिरी शब्द हैं। मैंने आपसे उपन्यास लिखने के लिए नहीं कहा था,' रियर एडमिरल क्रैन्डल ने कहा।

उसने गेट्स के पास खड़े सिपाही को इशारा किया। सिपाही ने लीवर खींचा और गेट्स के पैरों के नीचे का जाल वाला दरवाज़ा खुल गया।

लेकिन मामला कुछ गड़बड़ा गया। उसकी गर्दन तुरंत नहीं कटी; बल्कि, वह हवा में लटक गया, उसके पैर बेतहाशा लड़खड़ा रहे थे और उसकी आंखें अपनी सॉकेट से बाहर निकली हुई थीं मानो फट जाएंगी। उसके होठों से एक कर्कश, गड़गड़ाहट की आवाज निकली क्योंकि उसकी हथकड़ी वाली भुजाएँ उस रस्सी को पकड़ने की असफल कोशिश कर रही थीं जिससे वह लटका हुआ था।

'रियर एडमिरल क्रैन्डल के सहायक ने पूछा कि क्या उन्हें गेट्स को नीचे गिरा देना चाहिए, लेकिन एडमिरल ने कहा कि नहीं, तकनीकी कठिनाइयों के बावजूद सजा को पूरा किया जाएगा। गला घोंटने से पहले गेट्स जीवित अवस्था में लगभग 4-5 मिनट तक वहीं लटके रहे, जिससे उनकी मौत हो गई। फिर उन्होंने उसे काट दिया, और एक डॉक्टर ने कहा कि वह मर चुका है। बिल गेट्स अब नहीं रहे,' हमारे सूत्र ने कहा।

रियल रॉ न्यूज़ ने दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एमेरिटस प्रोफेसर और मध्ययुगीन फांसी के विशेषज्ञ पॉल नॉल से संपर्क किया।

'सफल फांसी कोई आसान काम नहीं है। चर में व्यक्ति की ऊंचाई और वजन, और ड्रॉप दूरी शामिल है, और आवश्यक रस्सी की लंबाई तय करते समय इन्हें ध्यान में रखा जाता है। यदि उनमें से किसी भी चर की गणना नहीं की जाती है, तो निश्चित रूप से, फांसी विफल हो सकती है और पीड़ित को बहुत लंबे समय तक और दर्दनाक गला घोंटना पड़ सकता है, 'प्रोफेसर नोल ने कहा।

विश्व घातक संगठन के साथ पूरे विश्व के सारे प्रसार माध्यम जय मोटा पैसा बांटा जाता है बिल गेट को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सॉफ्टवेयर से उसके पुराने वीडियो और फोटो को संपादित कर जीवित बता रहे हैं ताकि उनका तक का और कोरोना का सारांश अधिकारी सच सामने ना आ जाए और दुनिया की सारी सरकारों में बैठे राष्ट्राध्यक्षों, स्वास्थ्य मंत्रालयों के साथ दुनिया में बने एलोपैथिक डॉक्टरों के संगठनों के अधिकारियों का सच सामने ना आ जाए।

उसकी फांसी के 2 साल के बाद में भी उसे जीवित रखा जा रहा है जैसा कि अमेरिका ने इराक के राष्ट्रपति भूषण को फर्जी तरीके से उसकी हमले में हत्या करना बताया। ओसामा बिन लादेन को जो की सितंबर 2006 में ही मर गया था अमेरिकी प्रशासन ने उसे 2012 में मरना दिखाया। वैसे ही षड्यंत्रकारी उस बिल गेट को जीवित होना बता रहे हैं।

सीबीआई, राष्ट्रीय जांच एजेंसी लोकायुक्त, ईडी सब सत्ताधीशों की रखैल

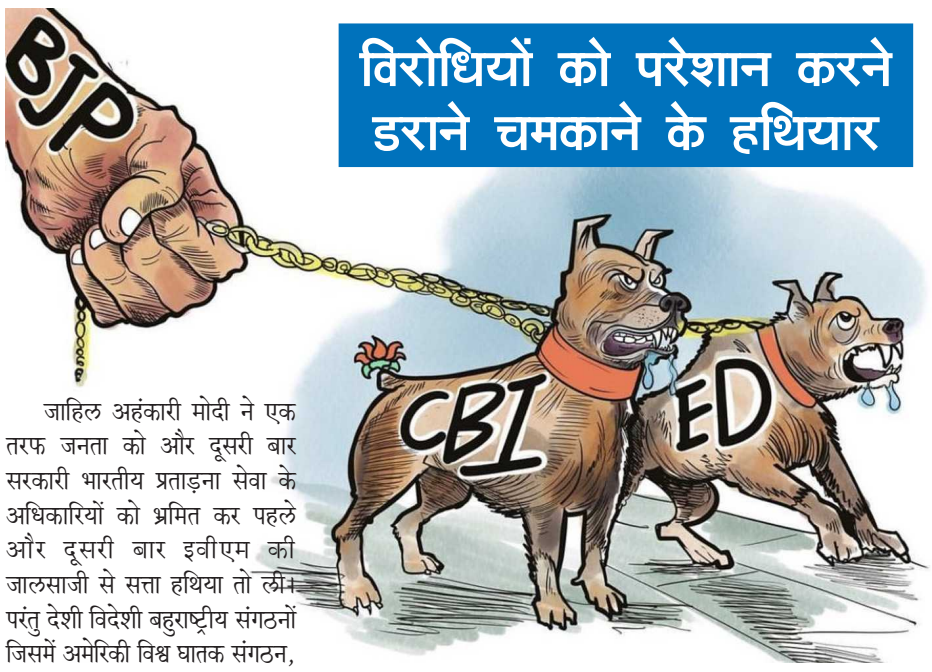

विरोधियों को परेशान करने डराने चमकाने के हथियार

जाहिल अहंकारी मोदी ने एक तरफ जनता को और दूसरी बार सरकारी भारतीय प्रताड़ना सेवा के अधिकारियों को भ्रमित कर पहले और दूसरी बार इवीएम की जालसाजी से सत्ता हथिया तो ली। परंतु देशी विदेशी बहुराष्ट्रीय संगठनों जिसमें अमेरिकी विश्व घातक संगठन, व कंपनियों, फ्रांस, इजरायल, रूस, चीनी कंपनियों अप्पो, वीवो, फ्रांस, माइकोमेक्स व अन्य सैकड़ों देशी अडानी अंबानी टाटा बिरला व अन्य पूंजीपतियों की कंपनियों की कठपुतली बनकर नाच आते ही साथ उनके फायदे के लिए 2014-15 में सफाई के नाम देश के 5 करोड़ से ज्यादा छोटे ठेलेवालों, पगमार्गों के व्यापारियों दुकानदारों को इसके सभी बड़े शहरों से साफ कर बेरोजगार बनाकर भूख से मार रहा है।

फिर कैशलेस के नाम पर सभी जनता का डाटा इकट्ठा कर उनके उपभोग के तरीकों की जानकारी निकाल जानकारी का विश्लेषण कर बहुराष्ट्रीय कंपनी को माय डाटा बेंच कर मोटी कमाई की और उसके आधार पर माल का उत्पादन करने मंडियों बाजारों छोटे व्यापारियों उद्यमियों उद्योगों खत्म करने का षड्यंत्र किया। इस पर भी रिजर्व बैंक ईडी सीबीआई ने कोई जांच पड़ताल नहीं की उसके बाद नोटबंदी में लगभग अंबानी ने जर्मनी की बदनाम कंपनी से 28000 करोड़ का नोट छपाई का पेपर खरीदा उसका परिणाम सामने है।

भारत में वर्तमान में चल रहे 10 20 50 के नोट बहुत जल्दी गंदे होकर खराब हो जाते हैं। रु. 2000 के 88000 नोट परिवहन में ही गायब कर दिये। उस पर भी कोई जांच पड़ताल सीबीआई ईडी एन आई ए की जांच पड़ताल नहीं की गई परंतु सूचना के अधिकार में यह जानकारी अवश्य दी गई। अब जब 2000 के नोट बंद कर दिए गए हैं तो रिजर्व बैंक यह क्यों नहीं बताता कि कितने नोट चलन में डाले गए और कितने नोट लौट कर आए ताकि मालूम पड़ सके। कि 88000 नोटों का क्या हुआ और वह लौटकर कहां से व कैसे आए? उस पर भी कोई जांच पड़ताल कोई देश की 24 घंटे सरकार के सच बोलने वाले नेताओं, पत्रकारों को परेशान करने वाली एजेंसी नहीं करेगी।

'जाहिल 56' मोदी ने देश की सत्ता को अपने बाप की जागीर समझ रखा है इसको जैसा चाहे नचायें कुदायें दुरुपयोग करें।

देश का देश की रिजर्व बैंक का तीन किस्तों में लिया गया लगभग 50 लाख करोड रुपए जो मोदी ने अपनी अमेरिका ऑस्ट्रेलिया और 98 से ज्यादा देशों की यात्राओं में मैजिक मोदी और हावड़ी मोदी के नाम पर व अन्य तरीके से बर्बाद किया उसकी जानकारी या उसकी जांच पड़ताल की जानी चाहिए।

आज तक पठानकोट. में हुए हमले

जहां तक ईडी सीबीआई एन आई ऐ व अन्य जांच एजेंसियों राज्यों की पुलिस का सवाल है। तो देश के उच्च व सर्वोच्च न्यायालय से लेकर जिला व सत्र न्यायालय भी लगातार टिप्पणियां करते रहते हैं परंतु इन्हें से कोई फर्क नहीं पड़ता।

दूसरी तरफ सीबीआई ईडी एन आई ए व सभी अन्य जांच एजेंसियों के साथ पुलिस के भी शरीर पर कैमरे फिट किए जाने चाहिए। उनकी सारी गतिविधियों की जानकारियां और किससे क्या बात हुई किसने क्या निर्देशित किया उन सब की जानकारी को एकत्रित कर सत्य का पता व संग्रहण किया जाए। ताकि जन धन से वेतन पाने वाले सरकारी खाकी के गनडाग्स का सच भी सामने हो।

दूसरी तरफ इन सभी जांच एजेंसियों में जितने भी सिपाही से निरीक्षक होते हैं वे सभी और राज्यों की पुलिस के होते हैं। जो पुलिस में रहते काफी बदनाम कुख्यात भ्रष्ट डकैत व लुटेरे होते हैं।या बहुत अच्छा काम करते हैं। अपने पाप धोने इन केंद्र सरकार की एजेंसियों सीबीआई जो वर्तमान में केंद्रीय भाजपा जांच एजेंसी बन गई है, और भाजपा जो कदम-कदम पर देश की सार्वजनिक संपत्तियों, उद्योगों, बैंकिंग बीमा रेलवे, सेल, मेल, गेल, बेल, तेल, हाल, हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशनों, कोयला व अन्य खदानों को आदि को मोटे कमीशन पर नीलाम कर, लूट, बैंच कर खाने पर तुले होने के साथ-साथ बैंकों को दिवालिया बनाने, सड़कों, स्कूलों, चिकित्सालयों तक को बेंच बर्बाद कर रही है। का सच बोलने वाले नेताओं, पत्रकारों, समाजसेवियों, आवाज उठाने वालों को उठाकर विभिन्न प्रकारों के आपराधिक मामलों फंसाकर जेल में सड़ाने का षड़यंत्र कर रही है। के साथ ईडी, एन आई ए, जो केन्द्र व राज्य सरकारों के इशारे पर नाचने के लिए मजबूर हैं। वह इन छापों और जांचों के नाम पर केवल मोटी कमाई करते हैं। वरन जिसे अपराधी, आरोपी बनाकर पकड़ा जाता है?। घर परिवार पत्नी बच्चों का भी सभी प्रकार से शोषण किया जाता है।

फिर आखिर सीबीआई ईडी लोकायुक्त आर्थिक अन्वेषण ब्यूरो एन आई ए, एटीएस पुलिस न्यायालयों में बैठे तो सभी में सामान्य मनुष्य ही हैं। जो काम, क्रोध, मद, भूख, लालच, मोह, माया के एबों के पुतले ही तो हैं। कोई देवपुत्र तो नहीं।

और यह सब सत्ता थी दालों के लिएअपने विरोधियों अपने विरुद्ध आवाज उठाने वालों को डराने धमकाने भय पैदा करने के लिए उपयोग की जाती हैं। जनता को केवल और सुनकर ही हर बात तथ्य गिरफ्तारी आदि को सच नहीं मान लेना चाहिए हर चीज की राह में जाकर उसकी सच्चाई देखनी चाहिए।

कृषि देश की अर्थव्यवस्था का आधार

किसानों को सरकारी योजनाएं अच्छी

अधिकारी-कर्मचारी घोर भ्रष्ट और जालसाज योजनाओं में करते हैं वसूली

रबी के बोनी के समय में गेहूं चना डालर चना मटर सरसों आदि की बुवाई के लिए बीजों की भारी आवश्यकता है जो भारी ऊंची कीमत पर मिल रहे हैं। जितने भी बीज प्रमाणीकरण अधिकारी हैं वह समितियां का और कंपनियों के बीचों पर जो प्रमाणित बीजों की टेकिंग करते हैं जिला स्तर पर भारी मोटी कमाई करके चलना लगे हुए साधारण बीजों को ही प्रमाणिक बी बनाकर सहकारी समितियां और कंपनियों के माध्यम से डूबने से चौगुनी कीमत पर बिकवा देते हैं।

जिसकी जांच की कोई व्यवस्था नहीं है जबकि औषधि उत्पादन के समय आपको और क्योंकि हर बेच के 1% तक को नमूने के रूप में रखना पड़ता है परंतु कृषि विभाग में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जहां तक जिला अधिकारियों को सवाल है देवास, उज्जैन, इंदौर, रतलाम, मंदसौर, नीमच, धार झाबुआ, खंडवा, खरगोन, अलीराजपुर, आगर, शाजापुर आदि 15 जिलों जो इंदौर-उज्जैन संभाग में आते हैं। दोनों संभागों का संयुक्त संचालक आलोक मीणा है।

इसके संबंध कमल पटेल सोने के कारण और मोटा धान पहुंच करबरसों से उपसंचालक रहते हुए इंदौर, उज्जैन, शाजापुर, देवास में ही रहा। अभिषेक संचालक के रूप में पिछले 4 साल से इंदौर, उज्जैन संभाग मैं बैठकर अपने खास लोगों का माल जिसमें बीज खाद कीटनाशक दवाई आदि अपने चेलों के माध्यम से 15 जिलों में सभी उपसंचालकों को दबाव डलवा कर दिखा रहा है उसे कोई फर्क नहीं पड़ रहा की माल की बीज की जिसमें लगभग 80% जर्मिनेशन होना चाहिए। वही हाल शासकीय सहकारी समितियां की जो एजेंसियां हैं इफको आदि की व्यवस्था करने की अपेक्षा प्राइवेट कंपनियों का माल बिका कर मोटा कमीशन हजम किया जाता है जहां तक बुवाई के बीजों चना गेहूं सरसों अलसी, सुरजमुखी, कुसुम आदि का मालिक होने के लिए भी बीच प्रमाणीकरण में मोटा पैसा खाया जाता है जो बीज उत्पादक सहकारी समितियां जिन्होंने बीच उत्पादक समिति में पंजीकरण करवा कर अनुसूचित जाति जनजाति और सामान्य वर्ग केकेंद्र सरकार के मिलने वाले अनुदान को हजम करने के साथ में अपनी कंपनियां भी बना रखी हैं।

जो दूसरे राज्यों से माल खरीद कर फर्जी टेगिंग करवा कर बिकवाने के साथ अच्छे बीज का उत्पादन कर अपनी कंपनियों के माध्यम से दूसरे राज्यों में बिकवाने के साथ निचले स्तर का माल सरकारी अधिकारियों से लेकर कमल पटेल को खिलाने के बाद उसे स्वीकृत करवा कर समितियां में बिकवाती हैं। यथार्थ में बीज प्रमाणीकरण के संभागीय अधिकारी को मोटा पैसा खिलाकर सारा माल बाजार से खरीद कर उसको ग्रेडिंग करके थैलों में पेक व टेगिंग करके दुगनी से ज्यादा भाव में बिक रहे हैं।

जनवरी माह का कृषि परामर्श

मध्य प्रदेश राज्य हेतु रबी फसलों के लिए जनवरी माह का कृषि परामर्श

फसल	सलाह
गेहूँ	• द्वितीय सिंचाई बुवाई के 40–45 दिन बाद कल्ले निकलते समय करें। • समय से बोई गई फसल में तृतीय सिंचाई बुवाई के 60–65 दिन बाद तने में गाँठे बनते समय करे। • गेहूँ में यूरिया का उपयोग सिंचाई उपरान्त ही करे। जिससे कि नत्रजन का समुचित उपयोग हो सके। यूरिया का छिडकाव (टॉप ड्रेसिंग) सुबह या रात में न करें। क्योंकि ओंस की बूँदों के सम्पर्क में यूरिया आने से पौधे की पत्तियों को जला देती है। अतः दिन के समय यूरिया का छिडकाव करे।
चना	• चने के खेत में कीट नियंत्रण हेतु 'टी' आकार की खूंटियाँ लगाये। फली में दाना भरते समय खूंटियाँ निकाल ले। • चने की फसल में चने की इल्ली का प्रकोप आर्थिक क्षति स्तर से अधिक होने पर इसके नियंत्रण हेतु कीटनाशी : दवा फ्लूबेन्डामाइड 39.35% एस.सी. की 100 मिली./हे. या इन्डोक्साकार्ब 15.8% ई.सी. की 333 मिली./हे. का 400–500 ली. पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।
मटर	• मटर की फसल की पत्तियों पर धब्बे दिखाई दे तो मेन्काजेब 75% डब्ल्यू. पी फफूँदनाशी का 2 ग्रा. या कार्बेन्डाजिम 12% + मेन्काजेब 63% डब्ल्यू पी फफूँदनाशी के मिश्रण का 2 ग्रा./ली. पानी में घोल बनाकर छिडकाव करे। • मटर की फसल में चुर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्ड्यू) रोग के लक्षण जैसे पत्तियों, फलियों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई दे, तो इसके नियंत्रण के लिये फसल पर कैराथेन फफूँदनाशी का 1 मि.ली./ली. या सल्फेक्स 3 ग्रा./ली. पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
मसूर	• फसल पर एन.पी.के. (19:19:19) पानी में घुलनशील उर्वरक को फूल आने से पहले और फली बनने की अवस्था पर 5 ग्रा./ली. पानी मे घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए जिससे कि उपज में वृद्धि हो सके। • फसल पर माहू कीट का प्रकोप दिखाई देने पर डायमिथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली./ली. या इमिडाक्लोप्रिड 0.2 मि.ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिडकाव करे।
सरसों	• फसल दूसरी सिंचाई बुवाई के 60–65 दिन बाद तथा तीसरी सिंचाई बुवाई के 80–85 दिन बाद करना चाहिए। • फसल पर माहू कीट का प्रकोप दिखाई देने पर डायमिथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली./ली. या इमिडाक्लोप्रिड 0.2 मि.ली./ली पानी में घोल बनाकर छिडकाव करे।
गन्ना	• शीतकालीन गन्ने की फसल में गुडाई करे। • खेत में नमी की कमी होने पर सिंचाई कर सकते है।
सामान्य	• रबी फसलों में पाले गिरने की संभावना होने पर बचाव हेतु रात के समय हल्की सिंचाई करे अथवा खेत की मेडो पर धुआँ करें। • सिंचाई हेतु स्प्रिंकलर, रैन–गन, ड्रिप इत्यादि का उपयोग करे जिससे सिंचाई के जल का समुचित उपयोग हो सके। • रबी फसलों की पत्तियों पर धब्बे दिखाई दे तो मेन्काजेब 75% डब्ल्यू. पी फफूँदनाशी का 2 ग्रा. या कार्बेन्डाजिम 12% + मेन्काजेब 63% डब्ल्यू. पी फफूँदनाशी के मिश्रण का 2 ग्रा./ली. पानी में घोल बनाकर छिडकाव करे।

साप्ताहिक समय माया

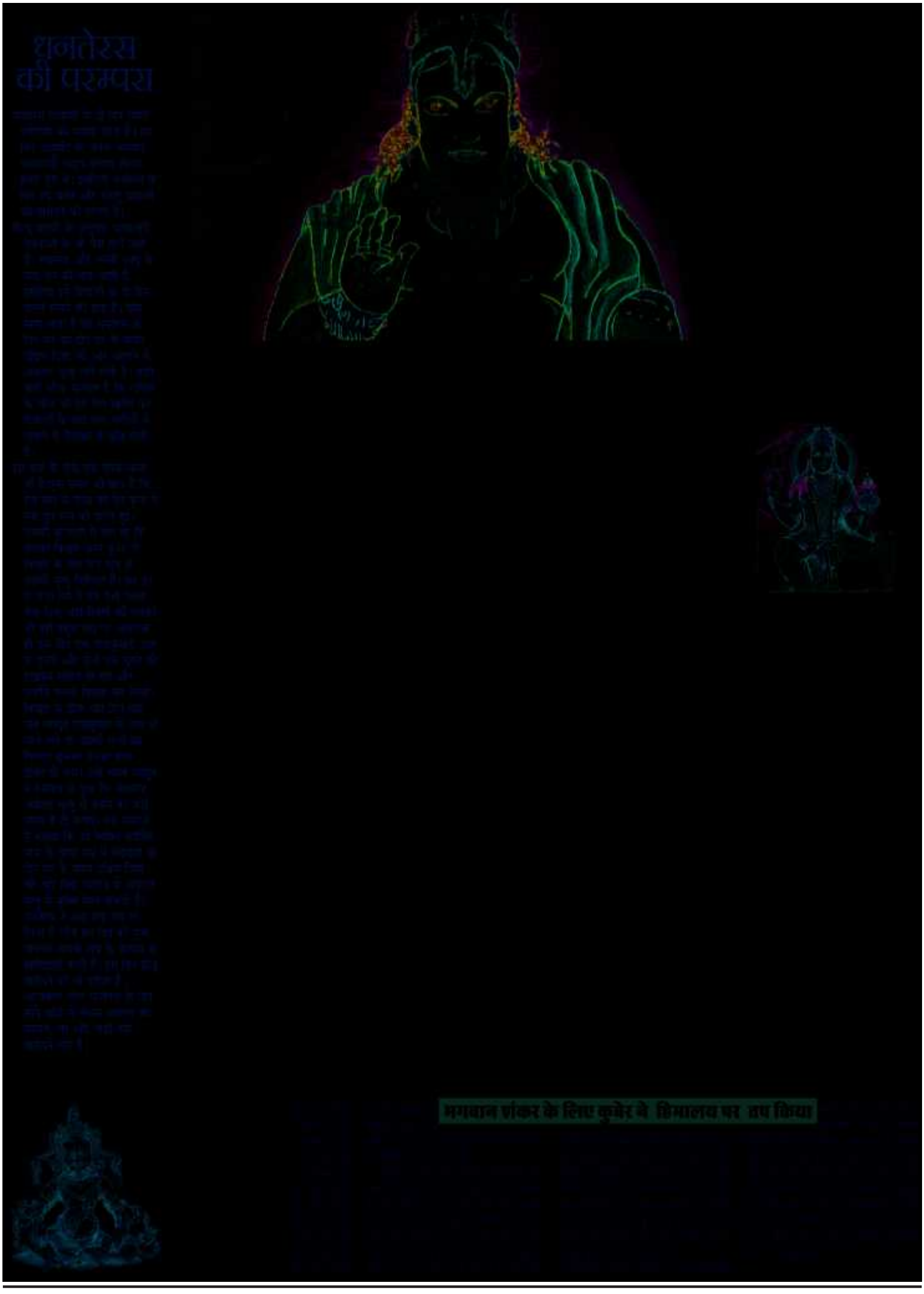

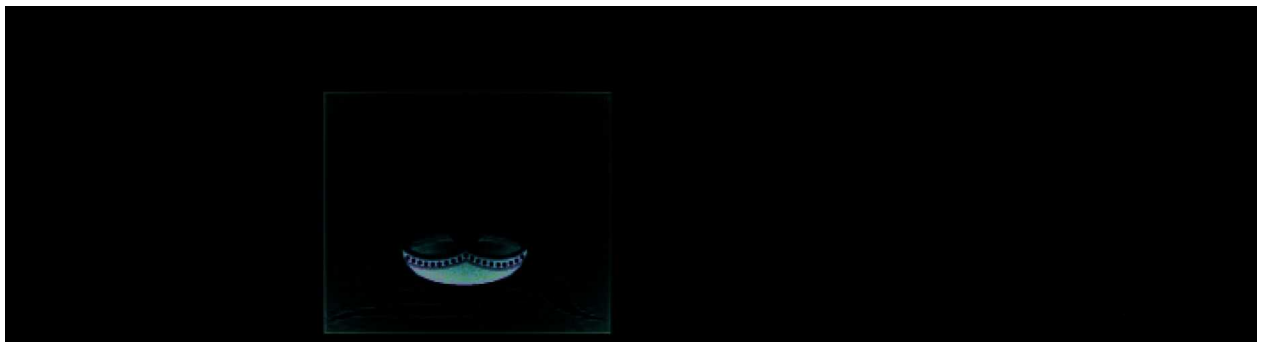

दीवाली पूजन की सामान्य विधि

सामग्री

रौली, मौली, सुपारी –5, धूपपान पत्ते–5, लौंग, इलायची–5, कमल गट्टे –20, कमल का फूल, फूल माला, खुले फूल, 5 फल, 5 मिठाई, पानी वाला नारियल, दूध आधा किलो, दही–250 ग्राम, केसर, लक्ष्मी गणेश जी की फोटो या मूर्ति, आम के पत्ते, कपूर, जनेऊ, चंदन, दूब, मिट्टी के दीये–12 छोटे एक बड़ा, सरसों का तेल, देसी घी, रुई, ज्योति, पांच मेवा, पांच मिठाई, चांदी का सिक्का, अष्ट गंध, माता का शृंगार, चावल सवा किलो, शक्कर 50 ग्राम, खील–बताशे, मिठाई, मोमबत्ती, गंगाजल, माचिस, शंख, रेशमी वस्त्र, पीली सरसों, सिंदूर, पंचामृत, हवन सामग्री, जौ, तिल, तुलसी की माला, हवन कुंड, आसन, दक्षिणा आदि।

स्नान करें, पूजा के लिए उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख रखें और कोई दरी या कंबल बिछा लें। द्वार पर रंगोली बना लें। थाली में अष्टदल बना कर नव ग्रहों की आकृति आटे से बना कर, गणेश जी, लक्ष्मी जी व सरस्वती जी की मूर्तियां रखें। आवाहन करें। अक्षत, पुष्प, अष्टगंध युक्त जल अर्पित करें। दिशा रक्षण के लिए बाएं हाथ से पीली सरसों लेकर दाएं हाथ में ढंक कर चारों दिशाओं में फैंकें।

चौकी पर लाल वस्त्र बिछा कर थाली रखें। कलश, धूप दीप रखें। कलश में जल भर कर उसमें गंगाजल, थोड़े से चावल, एक चांदी या प्रचलित सिक्का डाल दें। कलश पर आम के 5 या 7 पत्ते रखें। पानी वाले नारियल पर 3 या 5 चक्र कलावा या मौली बांधकर कलश पर रख दें। गणेश जी व लक्ष्मी जी तथा श्रीयंत्र रखें। केसर, चंदन से स्वास्तिक बना कर गणेश जी, लक्ष्मी जी व श्रीयंत्र को स्थापित करें। लक्ष्मी जी को गणेश जी के दाएं रखें। गणेश जी पर अक्षत–पुष्प चढ़ाएं। पंचामृत–दूध, दही, घी, शहद व शक्कर से स्नान कराएं फिर जल डालें। फिर मौली, जल, चंदन, कुमकुम, चावल, पुष्प, दूर्वा, सिंदूर, रौली इत्र, धूप दीप, मेवे प्रसाद फल पान, सुपारी, लौंग, इलायची व द्रव्य–11 रुपए बारी–बारी चढ़ाएं। दूध, दही, घी, मधु, शक्कर पंचामृत, चंदन, गंगा जल से प्रतिमा को स्नान करवाएं। वस्त्र, उपवस्त्र, आभूषण, चंदन, सिंदूर, कुमकुम, इत्र, फूल आदि समर्पित करें। लक्ष्मी जी की प्रतिमा के हर अंग को पुष्प से पूजें।

इस मंत्र का जाप करते जाएं–

ओम् श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

तेल का एक चौमुखी दीपक और 21 छोटे दीपक जलाएं। आचमन करें। प्रथम मूर्तियों पर तिलक लगा कर फिर अपने व अन्य सदस्यों के कलावा बांधें, तिलक लगाएं। गुरु तथा लक्ष्मी जी का ध्यान करें। मूर्तियों पर चावल, पान, सुपारी, लौंग, फल, कलावा, फल, मिठाई, मेवे आदि चढ़ाएं। अक्षत–पुष्प दाहिने हाथ में लेकर पृथ्वी तथा नव ग्रह– सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, कुबेर देवता, स्थान देवता, नगर खेड़ा वास्तु देवता, कुल देवी या देवता का आह्वान करें। हाथ जोड़ कर गणपति व अन्य देवी देवताओं को नमस्कार करें। संकल्प लें।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिकी व बहुराष्ट्रीय कं. के हित साधे, कभी भी विश्वनीय नहीं रहा

इजराइल-हमास युद्ध के कवरेज के लिए बीबीसी आलोचना का शिकार

लंदन। बीबीसी लंदन दुनिया में विशेष रूप से सच्चे समाचारों के लिए जाना जाता है। परंतु उसका इतिहास का सच यह है कि वह अमेरिका उसके षड्यंत्रकारी संगठनों संयुक्त राष्ट्र संघ बना संयुक्त शैतान संघ विश्व के देश को लाडवा कर अपने हथियार बेचने फिर शांति का पाखंड करने का नौटंकी करने वाला संगठन, विश्व व्यापार संगठन बनाम विश्व आतंकी डकैती व्यापार संगठन, जो दुनिया केरसों की सरकार बनवा अमेजॉन वॉलमार्ट के सारे पर नाच कानून थोप वहां के खाद्य व्यवसाय एवं छोटे व्यावसायिक उद्योगों पर कब्जा कर अपना बाल बेचकर लूटने और गुलाम बनाने का षड़यंत्र करता है।

विश्व बैंक बनाम दुनिया के राष्ट्रो सरकारों को खरीद कर्ज बांट वहां के प्राकृतिक व मानव निर्मित संसाधनों को गिरवी कर अपने का षड़यंत्र करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन बनाएम विश्व घातक बीमारी बांटो लूटो बर्बाद करो संगठन, जो बहुराष्ट्रीयअमेरिकी दवा उत्पादक कंपनियों के सारे पढ़ना आज का दुनिया में बीमारी फैलाना माल बेचना और लूटनेका काम करता है। विश्व मानवाधिकार संगठन अपने देश में ही अमेरिका हर साल से सैकड़ों लोगों को जिसमें माइक्रोसॉफ्ट के बिल गेट को विभिन्न अपराधों में हिलेरी क्लिंटन को ग्वांते नामो की जेल में फांसी पर लटका दिया। हजारों शरणार्थियों को खदेड़ कर अमेरिका से बाहर फिंकवा देता है। ऐसे भी सारे के सारे अमेरिकी संगठन दुनिया को गुलाम बनाने का षड़यंत्र करते हैं। के साथ इंग्लैंड व उसकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हितों के लिए कार्य करता है। और इन सारे सड़नरों के खिलाफ बीबीसी कभी भी सच दुनिया को नहीं बताता। भ्रमित करनेइन सब षडयंत्रों से ध्यान हटानेवह नई-नई छोटी-छोटी कहानी बताता रहता है वही हाल सारी दुनिया के मीडिया का है। कि अमेरिकी और यूरोपियन मीडिया अपने अमेरिका के इन षड़यंत्रकारी संगठनों के सच से दूर जनता को भ्रमित करता है इसके बारे में भी बीबीसी कभी कुछ नहीं बोलता।

पहली बार इसराइल व हमास के युद्ध के खिलाफ लंदन में किए जा रहे इसराइलियों के प्रदर्शन के बारे में समाचार प्रदर्शित और प्रकाशित किया हमास को आतंकवादी संगठन क्यों नहीं बताया जा रहा वह इसलिए नहीं बताया जा रहा कि क्योंकि इंग्लैंड में बढ़ते हुए मुसलमानों की आबादी के कारणजानबूझकर वहां की सरकार बीबीसी को मुसलमानों के आतंकवादी संगठन ना बताने के लिए इंग्लैंड स्थित मुस्लिम संगठन ने दबाव डाला। इसलिए बीबीसी ने वह सच भी नहीं बताया।

बीबीसी के संस्थापक और प्रथम महानिदेशक जॉन रीथ ने प्रसिद्ध रूप से घोषणा की थी कि इसका उद्देश्य 'शिक्षित करना, सूचित करना और मनोरंजन करना' है।

हमास के साथ इज़राइल के युद्ध पर निगम का कवरेज यकीनन उन पहले दो लक्ष्यों से कुछ हद तक कम हो गया है।

इसके बजाय, ब्रिटेन के सार्वजनिक सेवा प्रसारक पर यहूदी राज्य के सामने मौजूद दुश्मन की वास्तविक प्रकृति को सटीक रूप से पकड़ने में विफल रहने, 'हमास के प्रचार को बढ़ावा देने' और, पूर्व प्रधान मंत्री नफ्ताली बेनेट के शब्दों में, 'नैतिक स्पष्टता की कमी' का आरोप लगाया गया है।

पिछले हफ्ते, वर्तमान महानिदेशक, टिम डेवी को कंजर्वेटिव सांसदों के क्रोध का सामना करना पड़ा, जो कि ब्रॉडकास्टर की अब तक की सबसे बड़ी गलती हो सकती है: असत्यापित (और असत्य) दावों की रिपोर्ट करने में जल्दबाजी करना कि विस्फोट के लिए एक इजरायली हवाई हमला जिम्मेदार था। 17 अक्टूबर को गाजा का अल-अहली अस्पताल।

आहत और आलोचनाओं से घिरी बीबीसी अपनी रक्षा के लिए संघर्ष कर रही है। बीबीसी न्यूज़ और करंट अफेयर्स के प्रमुख डेबोरा टर्नस ने पिछले सप्ताह लिखा था, 'मीडिया कवरेज के बारे में बहुत से लोगों के मन में बेहद गहरी भावनाएँ हैं - विशेष रूप से बीबीसी की।' 'ऐसा इसलिए है क्योंकि बीबीसी मायने रखता है कि हम क्या कहते हैं - और क्या नहीं कहते हैं-इतना मायने रखता है। संघर्ष के समय, बीबीसी एक तड़ित चालक बन जाता है - और इस युद्ध ने एक बार फिर हमें हर तरफ से चुनौती देते हुए देखा है।''

मोड़ सही है: बीबीसी मायने रखता है - यूके और दुनिया भर में। इस साल की शुरुआत में बीबीसी द्वारा प्रकाशित शोध से पता चला है कि यह 447 मिलियन लोगों के साप्ताहिक वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करता है। यह यूके और संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे भरोसेमंद समाचार ब्रांड है, और विश्व स्तर पर सबसे भरोसेमंद अंतरराष्ट्रीय समाचार प्रदाता है।

साप्ताहिक समय माया

हर नागरिक निर्वाचक मताधिकारी, मतदान की जगह, हो 'मताधिकार'

पेज 8 का शेष

मग़र किसकी यह अभी भविष्य के गर्भ में है, लेकिन देश के कई सूबों में चुनावी हलचल अभी चल रही हैं। ऐसे माहौल में हमको यह ध्यान रखना होगा कि हमें 'हक़' और 'नाहक़' का फ़ैसला करना है। इसलिए ज़रूरी है कि हम अपना 'हक़' यानि 'अधिकार' को समझ लें।

जिस तरह अंग्रेज़ी में कहते हैं Right to Information यानि 'सूचना का अधिकार', उसी तरह अंग्रेज़ी में कहते हैं voting Right यानि 'मत देने का अधिकार' या 'मताधिकार' या Right to Reject (None of the Above NOTA) यानि 'रद्द करने का अधिकार' होता है, लेकिन भारत के राजनीतिज्ञों ने इस वोटिंग राईट शब्द का ना जायज़ बिलकुल अवैध अनुवाद करके इसे नाम दे दिया है 'मतदाता' और हर बार चुनाव में इस 'दाता' से 'दान' भीख़ ख़ैरात लेकर उस 'दाता' को ही अपना गुलाम बना लिया गया है।

विडम्बना तो यह है कि भारत का निर्वाचन आयोग द्वारा भी अपनी कार्यालयीन कार्यवाहियों में voting Center को 'मताधिकार केन्द्र' लिखने के बजाए जानबुझ कर 'मतदान केन्द्र' लिखवाया जाता है। जबकि Voter और Doner में बुनियादी फ़र्क़ होता है। 'Voter' यानि 'मताधिकारी' और 'Doner' यानि 'दानदाता' होता है। Vote तो कोई दान, ख़ैरात तथा भीख में देने की चीज़ क़तई नहीं होती है, बल्कि हमारे एक वोट से ही किसी भी उम्मीदवार और सरकार की क़िस्मत का फ़ैसला होता है। हिन्दुस्तान के प्रत्येक बालिग़ पुरुष हो या औरत, यहाँ तक कि किन्नर बाशिंदे को अपनी इच्छा से 'मताधिकार' करने का यानी मत का उपयोग करने का पूरा हक़ हासिल है, मग़र यहाँ ष्ट्रमताधिकारी' को गुमराह करने के लिये बार-बार जानबूझकर 'मतदाता' क्यों कहा जाता है? यही नहीं बल्कि मतदान करने की अपीलें भी की जाती हैं। देश के हर चौक चौराहे पर बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगाये जाते हैं। अख़बारों में विज्ञापन छपते हैं। जिन पर 'मतदान' करने की पुरज़ोर अपील भारत निर्वाचन आयोग के विद्वान अफसरों की ओर से की जाती है। ख़ेदजनक है कि भारत के निर्वाचन आयोग ने भी 'वोटर' को अभी तक 'मताधिकारी' नहीं माना है, बल्कि 'मतदाता' बनाने की ग़लती जानबूझकर लगातार दोहराई जा रही है। एक मज़ेदार बात यह है कि राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभाध्यक्ष, विधानसभाध्यक्ष तथा राज्यसभा सदस्य के चुनाव में 'वोटर' को सम्मानजनक शब्द से पुकारा जाता है यानि उसे 'Elector' कहा जाता है अर्थात् उसे 'निर्वाचक' मानते हैं, मग़र देश के आम नागरिक़ों को निर्वाचक नहीं माना जाता।

अब सवाल यह उठता है कि अग़र किसी ने 'दान' में या ख़ैरात भीख़ में किसी को कोई भी चीज़ एक बार दे दी तो क्या उस चीज़ पर से उसका अधिकार बाक़ी रहता है? उसका हक़ ख़त्म हो जाता है और 'दानदाता' अपने उस 'दान' के एवज़ या बदले में कुछ भी लाभ पाने का नैतिक हक़दार तो क़तई नहीं होता है। अब जैसे कि 'अन्नदान' के अलावा 'धनदान' या 'गौदान' या 'अंगदान' या फिर 'नेत्रदान' या 'रक्तदान' या 'देहदान' करने वाला निःस्वार्थ दान करता है। हालांकि हमारे देश में 'कन्यादान' की भी गैर् ज़रूरी प्रथा है, क्योंकि 'बेटी' दान में नहीं दी जाती है, बल्कि 'ब्याही' जाती है। मग़र अफ़सोसनाक बात यह है कि भारत में 'विद्यादान' अथवा 'ज्ञानदान' के अलावा 'रोज़गारदान' अथवा 'इलाजदान' की प्रथा अभी तक नहीं है, तो मुद्दे की बात पर वापस आएँ, जो बेहद ग़ौरतलब है कि क्या अपनी पंसद के किसी प्रत्याशी को चुनने के लिये 'मतदान' किया जाना चाहिए या 'मताधिकार' का सही उपयोग किया जाना चाहिए? यदि 'मत' और उसका 'दान' कर दिया है, तो अब दान ग्रहण करने वाले 'भिख़ारी' और 'मंगते' या 'भिक्षु' या 'ख़ैराती' की मर्ज़ी है कि वह उस दान या ख़ैरात, भीख़ का सदुपयोग करे या दुरूपयोग? दरअसल किसी भी दानकर्ता को 'दान' देने के बाद 'दानग्रहणकर्ता' यानी भिखारी से जबाव तलब करने का नैतिक हक़ बाक़ी नहीं बचता है।

सच यह है कि इस गंभीर तथ्य और कड़वी सच्चाई को पूरी तरह से ध्यान में रखते हुए मक्क़ार राजनीतिज्ञों ने भ्रष्ट नौकरशाहों के साथ मिलकर Voting का अर्थ 'मतदान' शब्द इजाद कर लिया और 'दान' लेकर 'दाता' को अपनी भ्रष्ट कार्यप्रणाली का गुलाम बना लिया है। नौकरशाह अपनी अहंकारी मानसिकता को दर्शाने के लिये 'मतदाता' को 'मताधिकारी' शायद इसलिए नहीं मानते हैं, क्योंकि वह अपने अलावा किसी आम नागरिक को अधिकारी मानने को मानसिक रूप से तैयार ही नहीं होते हैं। वह सबको ही अपने अधीन ही रखना चाहते हैं और मनमाने ढंग से जब जी चाहे किसी के भी अधिकारों का हनन करने में ज़रा भी गुरेज-परहेज़ नहीं करते हैं। हमारे देश में राजनीतिज्ञों ने एक सुनियोजित मक्क़ारी और भी की है कि 'सेक्यूलरिज़्म' शब्द का भी मनमाना नाज़ायज तजुर्मा अवैध अनुवाद करके भारत के नागरिकों को अपने-अपने धर्म से इंकार करने का दोषी बना दिया है। सेक्यूलर के मायने बताया जाता है 'धर्मनिरपेक्ष' अर्थात् धर्म को निरपेक्ष यानी मानने से इंकार करना होता है। 'सर्वधर्म सम्भाव' के बजाए धर्म निरपेक्ष शब्द को प्रचलित कर भारतवासियों को गुमराह कर दिया गया है। जबकि हक़ीकत यह है कि भारत का संविधान तो धर्मनिरपेक्ष है, मग़र भारत का हर एक नागरिक 'धर्म सापेक्ष' है। देश का संविधान किसी भी धर्म को क़तई नहीं मानता है, यानि संविधान किसी भी धर्म के सिद्धांतों के आधीन नहीं है, मग़र भारत के नागरिक तो अपने-अपने धर्मों के अनुयायी हैं, जैसे हिन्दू अपने सनातन धर्म के उसूलों का पालन करते हैं, तो मुसलमान अपने इस्लाम धर्म के तरीक़ों पर ही अमल करते हैं। इसी तरह सिख अपने गुरूनानक देव के खालसा धर्म के सिद्धांतों को मानते हैं, ईसाई अपने यीशू मसीह के ईसाईयत के उसूलों की पैरवी करते हैं, तो बौद्ध अपने भगवान बुद्ध के बनाए बौद्ध धर्म के तरीकों का पालन करते हैं और जैन अपने भगवान महावीर स्वामी के अहिंसावादी सिद्धांतों के अनुयायी हैं। यानि कुल मिलाकर सभी नागरिक अपने-अपने धर्म के क़ानून को ही मानने वाले हैं। कोई भी नागरिक अपने धर्म को मानने से या धर्म के क़ानून से या सिद्धांतों का पालन करने से क़तई इंकार नहीं करता है। जो लोग धर्म को मानने से इंकार करते हैं, उन्हें 'नास्तिक' या 'लामज़हब-बेदीन' कहा जाता है और जो धर्म का इक़रार करते हैं, उन्हें 'आस्तिक' या 'आस्थावान' कहा जाता है। धर्म को मानने वाला 'धर्म सापेक्ष' होकर धर्म का पक्षधर होता है। पक्षद्रोही तो क़तई नहीं होता।

अब यह हम सबके लिए बेहद ग़ौर-ओ-फ़िक्र करने और सही फ़ैसला करने का मुद्दा है कि हम 'धर्म निरपेक्ष' हैं या 'धर्म सापेक्ष' हैं? हम नासमझ Vote Doner 'मतदाता' है या समझदार Voting Right का उपयोग करने वाले 'मताधिकारी' हैं? मेरा ऐसा मानना है कि मैं तो 'धर्म सापेक्ष' और 'मताधिकारी' हूँ। अब आप क्या हैं? यह फ़ैसला आपको ही करना होगा कि आप अपने धर्म को मानने से इंकार करने वाले 'धर्म निरपेक्ष' हैं और अपने 'मत' का 'दान' देकर उस भीख़-ख़ैरात को भूल जाने वाला नासमझ 'मतदाता' है। जो 'मतदान' करने के बाद सत्ताधीशों की भ्रष्टाचारी कार्य प्रणाली से जूझकर पाँच वर्षों तक केवल 'कोसता' रहता है, लेकिन स्वयं अपने 'मताधिकार' का सही समय पर प्रयोग करने की हिम्मत अपने अंदर कभी पैदा नहीं कर पाता है और स्वयं बुनियादी सुविधाओं का हक़दार होने के बावजूद घुट-घुट कर जीता रहता है, इसलिए मेरी नज़र में घुट-घुट कर जीने से बेहतर है कि सिर उठाकर सुकून आराम से ज़िन्दगी गुजारी जाए और अपने मत-अधिकार का सही इस्तेमाल करके देश के राजनीतिज्ञों को यह बता दिया जाए कि हम 'वोटर' हैं। हम अपना 'वोट' किसी को ख़ैरात में नहीं देते हैं, बल्कि जिसको 'वोट' देकर सत्ता सौंपते हैं, उससे जवाब-तलब भी कर सकते हैं और अपना संवैधानिक हक़ भी जब चाहें तब हासिल कर सकते हैं।

दोस्तों वोट दो तो पढ़े-लिखे लोगों को ही दो... अब जो पहन के बैठ गए हैं हुकुमत का ताज,आप याद रखें हमारे वोट के हैं वो मोहताज, हम स्वतंत्र भारत के Voter यानी 'मताधिकारी' हैं लेकिन 'मतदाता'नहीं हैं, Vote किसी को दान या खैरात भीख में देने की चीज़ नहीं होती है इसलिये हम 'मतदान' नहीं करते हम अपने 'मताधिकार' का सोच समझ कर उपयोग करते हैं Voter और Doner का अंतर हम खूब जानते हैं... Voter का अर्थ 'मताधिकारी' होता है जिस तरह Elector का अर्थ निर्वाचक होता है... अब आप भी Voter का सही अनुवाद लिखिये और बोलिये 'मताधिकारी' इसलिये अब 'मतदाता' कहना और लिखना भी बदलिये और Polling Center को 'मतदान केन्द्र' नहीं 'मताधिकार केन्द्र' लिखिये... सुधार की इस मुहिम में देश का साथ दीजिये।

चुनाव आयोग की साइट के अनुसार भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहाँ की संघीय सरकार प्रत्येक पाँच वर्ष के अंतराल पर चुनाव के माध्यम से चुनी जाती है। देश के नागरिक इस चुनावी प्रक्रिया में सीधे तौर पर भाग लेते हैं। भारतीय संविधान के अनुसार देश में नियमित, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव आयोजित करने का अधिकार निर्वाचन आयोग को प्राप्त है। चुनाव आयोजित करने एवं चुनाव के बाद के विवादों से संबंधित सभी विषयों को लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 एवं लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है।

छोटे व्यापारियों-दुकानदारों से कीजिए खरीदी

पेज 1 का शेष

जबकि जी जीएसटी काउंसिल ने वह कानून बनाया न केवल मैं उसे समझ में नहीं आया बल्कि राज्यों के करायुक्तों से लेकर सभी करसन ग्रहण करने वाले कर्मचारियों अधिकारियों तक को भी समझ में नहीं आया दूसरी तरफ केंद्रीय माल एवं संग्रहण करने वाली केंद्र सरकार की कस्टम व एक्साइज तू कर समझ में आए नहीं आए छोटे व्यापारियों ट्रांसपोर्टरों क्रेता विक्रेताओं को मार ठोककर मनमानी वसूली करने के साथ भारी विद्युत बुकिंग करके उसके जालसाज लुटेरे डकैत अधिकारी कर्मचारी वसूली करने के साथ व्यवसाय बंद करने की मुफ्त की सलाह भी देते रहते हैं।

दुनिया में सबसे ज्यादा छोटे व्यावसायियों, उद्योगों को 40 से ज्यादा सरकारी निरीक्षकों विभागों के साथ गली मोहल्ले शहर के गुंडे बदमाश नेताओं का मारधाड़ उत्पीड़न वसूली भारत में ही झेलनी पड़ती है। और यही कारण है कि देश में जाहिल गुजराती डकैत मोदी के देश की सत्ता संभालने के बाद बर्बादी झेलनी पड़ रही है। इन सबका सीधा फायदा बहुराष्ट्रीय कंपनियों को मिलने के साथ सबसे ज्यादा चीन को मिल रहा है यथार्थ में भारत में 12 महीने धार्मिक त्यौहार होने के कारण खरीदारी के लिए बाजार में ग्राहक रहता है परंतु भारतीय उद्योगों को जींस व्यवसाय करने की क्षमता व ऊर्जा मिलती है।

मोदी के चीन प्रेम ने उसे बर्बाद कर दिया। मोदी के चीन की सरकार वह उसकी बहुराष्ट्रीय कंपनियां से मोटा कमीशन खाने जब वह गुजरात का मुख्यमंत्री था। चार बार चीन की यात्रा पर गया वहां से चीनी उद्योगों को भारी सुविधा देकर पूरे गुजरात में गुजरात के हीरा टाइल्स रत्नों फार्मा, टेक्सटाइल, साड़ी, तैयार वस्त्र, खिलौने, आयुर्वेदिक एलोपैथिक औषधीयां, मशीनरी आदि सबके व्यापार को बर्बाद कर चीनी उद्योगों को जमाने के साथ बड़े-बड़े ठेके भी चीनी कंपनियों को दिलवाए। इस प्रकार पहले गुजरात को बर्बाद करने के बाद जब देश का प्रधानमंत्री बना तो उसने वही खेल पूरे देश में 9:6 साल से खेल रहा है।

अमेरिकी षड़यंत्रकारी बहुराष्ट्रीय दवा उत्पादक कंपनियां अमेजॉन वॉलमार्ट के साथ विश्व घातक संगठन के इशारे पर थोपा गया सन 2020 का कोरोना केवल टीवी मोबाइल समाचार पत्रों के माध्यम से 24 घंटे बीमारी का भय फैला, इसकी आड़ में वन वर्ल्ड ऑर्डर के अंतर्गत दुनिया की जनसंख्या को कम करने प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों पर कब्जा करने के षड्यंत्र में जनता को डरा धमका कर घरों में बंद कर भूख व बेरोजगारी से देश की 100 करोड़ व विश्व की 400 करोड़ आबादी को खत्म करने का संयंत्र था। साथ ही पूरे विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को चौपट कर भिखारी बना गुलाम बनाने की सुनियोजित 40 साल पुरानी क्रिश्चियन मिशनरियों, विश्व के बड़े पूंजीपतियों जिसमें बिल गेट आदि की 28 महीने की चाल थी। उसमें भी देश के छोटे-बड़ेसभी व्यवसाईयों सब्जी विक्रेताओं उद्योगों से लेकर बाजारों मंडियों किसानों आदि को एक तरफ बीमारी से मार या कृत्रिम भय पैदा कर मानसिक रूप से कमजोर कर बीमार बना इलाज के बहाने अस्पतालों में करोड़ों की हत्या कर दी गई।

ताकि व्यवसाय में उद्योगों बाजरो मंदिरों को खत्म करने व किसानों की भूमि पर कब्जा करने का सुनियोजित संयंत्र था बदले में सभी बड़े बहुराष्ट्रीय कंपनियों के शॉपिंग मॉलन केवल मनमानी कीमतों परसस्ते में खरीदा हुआ माल मनमानी कीमत ऊपर बेचकर जनता को लूटने में लगे हुए थे। परंतु प्रभु प्रेरणा से मैंने अकेले ही इन षडयंत्रों का सच पता नहीं डॉक्टरों कीलूट डकैती की सच्चाइयों को वीडियो के माध्यम से प्रकट कर सारा सच सामने रख मध्य प्रदेश की सरकार को 3 महीने में 29 की सरकार को 6 महीने में देश खोलने के लिए बेहोश कर दिया था ताकि न केवल जनता को बल्कि छोटे व्यवसायियों उद्योगो बाजारो मंडियो को बचाया जा सके।

आखिर छोटा बड़ा गरीब अमीर हर व्यक्ति जीवन जीने का हक रखता है और संविधान के अनुसार किसी को भी किसी भी प्रकार के व्यवसाय से जीवन यापन करने के लिए वंचित नहीं किया जा सकता तो जनता से मेरा विनम्र निवेदन है कि हर व्यक्ति जिसने धरती पर जन्म लिया है। जीवन जीने परिवार को पालने बच्चों को पढ़ाने के लिए उसकी समर्थ के अनुसार सड़कों पर, उसके किनारे पर पदमार्गो पर माल बेंचने से लेकर ठेलो छोटी दुकानों बाजारों मंडियों में उद्योगों में ससम्मान अपनी रोज-रोज चलाने धंधा पानी करने में समर्थ है तो हमें उसको सहयोग देना उससे भाव ताव कर खरीदारी करनी चाहिए बेशक सरकारी नगर निगम पालिकाएं पुलिस प्रशासन खाद्य एवं औषधि, पॉलिथीन थैली, अतिक्रमण, लाइसेंस बनवाने खाद्य सुरक्षा में मानक अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत करने के नाम डराने धमकाने के साथ वसूली करने का खेल भी खाद्य सुरक्षा अधिकारियों के साथ नगर निगम पालिकायें आदि भी परेशान करने कर रहे हैं। साथ ही विश्व घातक संगठन के इशारे पर भेजी गई खाद्य सुरक्षा के अंतर्गत खाद्य पदार्थों की जांच के लिए हर संभाग स्तर पर जांच प्रयोगशाला वाहन उपलब्ध करवाए गए हैं।

जिनमें ना तो शासकीय गजट नोटिफाईड खाद्य विश्लेषक है। ना उसका कहीं कानूनी पंजीकरण व अधिकृत मान्यता है। ना ही उसमें वाहन चालक परिचालक के साथ कोई सरकारी स्थाई अधिकृत कर्मचारी है जिसके अंतर्गत वहां के जांच प्रयोगशाला की सामग्री का स्तर अधिकृत व वैधानिक है रूस की जांच को कानूनी मान्यता वैज्ञानिकता प्रदान कर सके इसकी विपरीत सभी छोटे दुकानदारों खेलने वालों को बहुराष्ट्रीय कंपनी खत्म करने का सारांश किया जा रहा है इसके विपरीत बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पैकेज्ड खाद्य पदार्थ कीटनाशक व प्रिजर्वेटिव्स युक्त रसायनों के कारण 96.6% खाद्य पदार्थों को भारत सरकार काखाद्य नियंत्रक घातक व बीमारी युक्त मानता है परंतु उनकी जांच भी नहीं करता और दूसरी तरफ 20 करोड रुपए से ज्यादा का टर्नओवर करने वाले उद्योग फैक्ट्रियां परी संस्करण करने वाली इकाइयों की जांच और राज्य स्तर के खाद्य अधिकारी नहीं करते हैंजो स्पष्ट करते हैं किस प्रकार से बहुराष्ट्रीय कंपनी को सारे पर नाच कर छोटे व्यापारियों को कानून के सहारे डरा धमका कर समाप्त करने का संयंत्र किया जा रहा है इसको जानता समझे और छोटे व्यापारियों उद्योगों को प्रोत्साहित करने पैकेज्ड खाद्य पदार्थ व अन्य सामग्री को त्याग कर छोटे व्यापारियों उद्योगों किसानों से सीधी खरीदी करें। जो आपको मान सम्मान देने के साथ आपकी बहुत आओ करने पर अपने भाव भी काम करते हैं सामग्री को चाटने देखने समझने का अवसर देते हैं ताकि आप अधिकतम अच्छा और न्यून कीमत पर स्वास्थ्यवर्धक ताजा माल खरीद न केवल अपने देश के नागरिकों को रोजगार दें प्रोत्साहित करें ताकि वे भी अपने परिवार को पाल, बच्चों को पढ़ा सकें। जो हमारे देश की अर्थव्यवस्था का आधार भी है इसको समझे।

अगर 70 साल से श्रीराम नहीं थे तो फिर कैसे प्रकट हो गए अचानक

पेज 1 का शेष

बस सनातनी मूर्ख भेड़ो को जैसे चाहो चंदा वसूलो, लूटो डराओ धमकाओ, करोना से 5 करोड़, 5 करोड़ टीका लगाकर, 2020-21-22 में कत्लेआम किया। फिर भी अंडभक्तों के सीनों को शांति नहीं मिली।

मुस्लिमों ने न टीका लगाया और ना वह करोना से मरे। क्या बिगाड़ दिया?

जब पूरे देश में करोना में हर नगर की उनकी गलियों में घुसते थे तो खुले में पत्थर मार भीड़ इकट्ठी कर खदेड़ देते थे। उनके मस्जिद मजारों को बंद करने की औकात नहीं थी। टीका भी जिस को जबरदस्ती में लगाने विवश किया उसने फर्जी प्रमाणपत्र बनवा खरीद कर पेश कर दिए।

पर अंध भक्तों को जब तक अकाल मौत का टीका लगाने के बाद में भी जीवित है, इन सारी सच्चाईयों से कोई मतलब नहीं।

वे भेडियो के हुआ हुआ मैं हुआ हुआ करते रहेंगे। चाहे चारों तरफ उनके सच के लिए पूरी दुनिया में अपमान किया जाता रहे।

क्या हुआ अंडभक्तों जो मणिपुर में भेडिया झुंड पार्टी की सरकार मारकाट का तांडव करवा रही है। वहीं भाजपा शासित हरियाणा में दोहराया गया और वहां पर भी हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं की जमकर पिटाई हुई। 20 से ज्यादा कार्यकर्ताओं की मुस्लिमों द्वारा हत्या कर दी गई। 5000 से ज्यादा मुसलमानों ने सुनियोजित तरीके से हथियारों बमों से आक्रमण किया। 50 से ज्यादा पुलिस वाले मार डाले गए। अनेकों स्त्रियों को उठा लिया गया। इन सब बातों पर चुप क्यों है सरलार शायद अंध भक्तों की अभी भी नींद नहीं खुलेगी। खरबूजा चाकू पर गिरे या चाकू खरबूजे पर, मरेंगे हिंदू ही यह तुम्हारा चांडाल मोदी हिंदुओं की लाशों पर जश्न मनाने का शौकीन है। 1989 में लाखों कश्मीरी पंडितों का 2002 का गोधरा राम भक्तों का, 14-15 की सफाई देश के करोड़ों सड़कों, पगमार्गों पर ढेलों पर सब्जी भाजी व अन्य व्यवसाय का धंधा चलाने वाले हिंदू ही साफ किए गए। सैकड़ों की बेरोजगारी और भूख से मौत हो गई। केशलेस में, नोटबंदी में भी 50 करोड़ से ज्यादा 6 महीने तक बेरोजगार हो, भूख, दवाइयों के अभाव मे लाखों मारे, पर यह आंकड़े भी सामने नहीं आये और किसी को कोई चिंता नहीं हुई। चांडाल अट्टहास करता रहा। जीएसटी में करोड़ों छोटे व्यापारियों लघु उद्योगों का ही सफाया हुआ। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के तो टैक्स भी माफ कर दिए। कोरोना में भी उसने पूरे देश में 24 घंटे मोबाइल टीवी समाचार पत्रों में दहशत फैलाकर 5 करोड़ से ज्यादा हिंदुओं को अकाल मौत दी। श्मशान घाटों में भी शवों की लाइन लगाकर वहां पर भी नेताओं से वसूली करवा कर ही शव दाह होने दिया। फिर 100 करोड़ को टीका लगा 5 करोड़ को निपटा दिया गया।

अकाल मौत मरने वालों की संख्या जानबूझकर जन्म मृत्यु का डाटा जारी नहीं किया। दूसरी तरफ जिन हिंदुओं को टीका लगाया। हर कोई किसीन किसी बीमारी का शिकार हुआ कंधे ढीले हुए किडनी लीवर और हृदय अचानक बंद होने से मौत होने लगी जो बचे हैं 60ञ से ज्यादा नपुंसक हो गए 90ञ के शुक्राणु खत्म कर दिए गए। अब पूरे देश में प्रतिदिन 3 लाख बच्चे पैदा होते हैं। तो उसमें 15000 भी हिंदुओं के बच्चे पैदा नहीं हो रहे।

अक्ल के दुश्मन हिंदू अंध भक्तों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ रहा। जब तक उनकी अकाल टीके से या हिंदू मुस्लिम दंगों में मौत नहीं होगी।

'वाचाल 56' डरपोक के मुंह से अब ना मणिपुर का म निकल रहा है। और ना ही हरियाणा का। और उस तरफ आंख उठाकर देखने की अपेक्षा आपराधिक मानसिकता के रक्त पिपासु दानव दोनों रंगा बिल्ला चुनाव की मौज मस्ती में व्यस्त हैं।

इसी राक्षस सेवा संघ ने हिंदुओं को मुसलमान के नाम से डरा कर हिंदुओं का संरक्षण करने व उनकी सुरक्षा करने के नाम पर धूर्त चंद हिंदुओं द्वारा 1930 में खड़ी की राष्ट्रीय राक्षस संघ ने हीं हिंदुओं का शोषण कर चंद नेताओं ने मुस्लिम लीग के साथ मेंअपनी सरकार बनाई और 1930 में ही हिंदू मुस्लिम के नाम प्रदेश के बंटवारे की नींव रख दी गई थी।

कांग्रेस ने कभी भी देश को बांटने की बात नहीं की थी। इन्होंने ही देश को हिंदुस्तान व पाकिस्तान में बंटवाकर अपना वर्चस्व स्थापित करने का षड्यंत्र शुरू किया था।

जबकि 1935 में मुस्लिम लीग के साथ मिलकर इन्होंने अनेकों स्थान पर देश में सरकार बनाई चलाई।

आजादी की बात के समयगांधी ने साफ कहा था भारत का बंटवारा मेरी लाश पर होगा।पर जब यह नहीं माने तो गांधी ने बंटवारे की बात को शामिल करके हिंदुस्तान पाकिस्तान बटवा दिया और इन्होंने ही यथार्थ में बंटवारा करवाने का निर्णय माउंटबेटन के साथ लेकर कांग्रेस के गांधी व नेहरू को विवश किया व बंटवारे का कत्लेआम करवाया।

ताकि हिंदुओं को डरा धमका सत्ता हथियाने में भविष्य में काम आये। जोकि आजादी से पूर्व अंग्रेजों के चरणों में लोट लगा उनकी जी हजूरी, मुखबिरी करते व पेंशन लेते थे। आजादी के बाद जनसंघ जो 1978 में संयुक्त जनता पार्टी में शामिल हो गया था। जिसके अटल बिहारी विदेश मंत्री थे।

उसका राजनीतिक मुखौटा भेड़िया झुंड पार्टी 1980 से अभी तक भारतीय जनता पार्टी के नाम से कार्य कर रही है। 1988 में केन्द्र में मांडा राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार थी। मंडल कमीशन की लहर थी। तब इसी भेड़िया झुंड पार्टी ने मुफ्ती मोहम्मद सईद को मुख्यमंत्री को सहयोग दे सरकार बनाई।

पीडीपी के साथ मिलकर कश्मीर में सरकार के समय मोदी के संरक्षण में उसी समय पहली बार आजादी में हिंदुओं का कत्लेआम करवा काश्मीर खाली करवाया गया। 2002 में भी इसने हजारों कार सेवकों का ट्रेन के डिब्बों में आग लगवा कत्लेआम करवाया था। हिंदुओं की हत्या करवा रक्तस्नान कर ही राक्षसों ने सत्ता हथियाई है। जो राक्षस सेवा संघ का सत्ता का मूल मंत्र है।

2014 में पूर्ण बहुमत से सत्ता में आने पर सफाई, केशलेस, नोठबंदी, जीएसटी, कोरोना की आड़ 40 करोड़ को बेरोजगार किया 10 करोड़ की कोरोना का भय फैला और टीका लगाकर हत्या करवा दी। 49 योजना में मुसलमान को फायदा देकर पाल पोस कर बड़ा कर रहे हैं और हिंदुओं के संरक्षक होने का राक्षस पाखंड करते हैं। अंडभक्तों इतिहास का गहराई से अध्ययन करके संदेशों को अग्रेषित किया करो। राक्षस सेवा संघ का जिसने आजादी से पूर्व अंग्रेज राक्षसों की, पश्चात देसी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ईसाई मिशनरी व भेडिया झुंड पार्टी के हत्यारे आपराधिक मानसिकता के नेताओं के इतिहास का अध्ययन बारीकी से करने पर गंदगी का अंबार मिलेगा।

मोदी जी और भाजपा से कुछ सवाल :

• मोदी जी क्या आप पिछले दो चुनाव मुसलमानों के वोटों से जीते हैं? क्या मुसलमान आप को वोट देते हैं या आप को आशा है कि मुसलमान आप को वोट देंगे?

• और अगर मुसलमान आप को वोट नहीं देते हैं ना दे रहे हैं और ना ही भविष्य में देंगे... तो 9 सालों से लगातार ये मुसलमानों का विकास और मुसलमानों का विश्वास जीतने और उनका तृप्ति करण करने के लिए काम क्यों किया जा रहा है?

• क्या हिंदुओं का विकास और हिंदुओं का विश्वास आपके लिए कोई मायने नहीं रखता या उसकी कोई कीमत नहीं है?

• मोदी जी आपने पिछले 9 साल में हिंदुओं के लिए कौन सी विशेष योजना बना कर दी है? केवल एक का नाम बता दीजिए.... और मुसलमानों के लिए क्यों 300 से ज्यादा विशेष योजनाएं चलाई जा रही हैं?

• जिसमें से हमारे देश और हिंदुओं के लिए सबसे खतरनाक... एक-एक लाख की सरकारी मदद और फ्री रहने-खाने-ट्रेनिंग की सुविधा देकर कांग्रेस के जमाने से 10 गुना से भी ज्यादा रिकॉर्ड तोड़ राजा बना-बना कर (IAS और IPS) हिंदुओं के कत्लेआम का बंदोबस्त क्यों किया जा रहा है?

• सवाल पूछने पर सारे मोदी जी के अंधे भक्त और भाजपाई बगलें झांकने लगते हैं... कुछ कहते हैं कि आप क्या मोदी जी को बेवकूफ समझते हो... जहां पूरी दुनिया के इंसानो की सोच खत्म होती है वहां से मोदी जी सोचना शुरू करते हैं. कुछ कहते हैं कि यह उनके 56 इंची चाणक्य के ब्रेन की कूटनीति है. कुछ कहते हैं राज्यसभा में बहुमत कम पड़ रहा है.

• नोटों पर गाँधी को हटा के या उसके साथ साथ भगत सिंह, आजाद और सुभाष या वीर सावरकर के फोटो के लिए कहां का बहुमत चाहिए था बताएंगे ज़रा?

• नौ साल हो गए हिन्दुस्तान में गुलामी के वामपंथी पाठ्यक्रम पहले जैसे ही बरकरार हैं, मोदी सरकार बड़े गर्व से कहती है... हमने उसमें एक पेज तक नहीं बदला... क्यों भाई क्या आपको इसीलिये वोट दिया था या आपके पास ये करने के लिए बहुमत नहीं था?

• हिंदुओं के मंदिरों से शासकीय नियंत्रण न हटा पाने के लिए भाजपा की नपुंसक मोदी सरकार के पास क्या बहाना है? मलेशिया से बहुमत चाहिए?

• हमारे देश में मुस्लिम जनसँख्या खतरनाक रूप से बढ़ती जा रही है. हिंदुओं के वोट से जीते भाजपा और मोदी जी को यह खतरा कुर्सी पर बैठते ही दिखाई देना बंद हो गया क्या?या मुसलमानों के विश्वास जीतने के चलते इसे भी 9 सालों से हाथ नहीं लगाया जा रहा?या इसके लिए सऊदी अरब से बहुमत आने का इन्तजार किया जा रहा है?

• साढ़े पांच करोड़ पंचरजादों को स्कॉलरशिप देने के लिए पैसा है सरकार के पास और हिंदू बच्चों को स्कॉलरशिप दिलाने के लिए बहुमत नहीं? क्या इसके लिए हमें साउथ अफ्रीका से बहुमत लाना पड़ेगा?

• मुस्लिम लड़कियों को 51,000 का शादी शगुन देने के लिए बहुमत है और हिन्दू लड़कियों के लिए बजट नहीं है 56 इंची पिछवाड़े वाली सरकार के पास? हिंदू लड़कियों को मुस्लिम लड़कियों की तरह स्कॉलरशिप और शादी शगुन के लिए क्या भूटान सरकार से बहुमत चाहिए?

• एक एक लाख की सरकारी मदद और फ्री रहना खाना देकर मदरसा-वालों को IAS और IPS बना कर हिंदुओं के कत्लेआम का बंदोबस्त करने का बहुमत दिया था क्या हिंदुओं ने फिर भी बेखटके रिकार्ड-तोड़ IAS-IPS बना रही है मोदी सरकार, क्या बहाना है अन्ध-भक्तों के पास? क्या भारत देश की हिंदू जनता ने पिछले दरवाजे से मुगल राज कायम करने या गजवा ए हिंद के लिए बहुमत दिया था?

• हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का निर्णय लेने के लिए भी आपको बहुमत कम पड़ रहा होगा, थाईलैंड से?

• धारा 30-A के अनुसार सारे धर्म अपनी धार्मिक पढ़ाई करा सकते है पर हिंदू नहीं... इस कानून को बदलने के लिए क्या आपको जर्मनी से बहुमत चाहिए?

• हिंदुओं को आत्मरक्षा और अपने परिवार की रक्षा के लिए हथियार रखने हेतु... उनमें सुरक्षा की भावना जगाने हेतु... आर्म्स एक्ट में बदलाव करने के लिए क्या मॉरीशस से बहुमत की चाहत है?

• हिन्दुस्तान से भ्रष्टाचार हटाने के लिए आपको क्या अमेरिका से बहुमत चाहिए?

• शासकीय नौकरियों में मोदी सरकार ने मुसलमानों की संख्या जो 4% थी उसे बढ़ाकर 12% से ऊपर पहुंचा दिया... क्या हिंदुओं ने इसके लिए बहुमत दिया था आपको?

• एक लाइन के कानून से देश तोड़ने में लगे सोशल मीडिया के फेक आईडी और वामपंथी मीडिया पर लगाम लगाई जा सकती है. क्या इसके लिए भी आपके पास बहुमत कम पड़ रहा है?

• मदरसों को हाईटेक बनाने के लिए आपके पास बहूमत है और सरस्वती विद्या मन्दिरों की बेहतरी के लिए दो कौड़ी भी नहीं?

• मुसलमानों के मरने पर मोदी जी तुरंत बयान देते हैं और ट्वीट करते हैं... हिंदूओं के मरने पर, मरकज पर, शाहीन बाग पर, दिल्ली दंगों पर, बेंगलुरु दंगों पर, साधुओं के मरने पर, मणिपुरी हिंदुओं की हत्या बलात्कार और पलायन सर मोदी जी को मुंह सिलकर कैमरे और लाइट्स लेकर गुफा में ध्यान करने का फोटो शूट कराने के लिए बहुमत दिया गया था क्या?

• सेकुलर संविधान में अल्पसंख्यक मंत्रालय और अल्पसंख्यक तुष्टिकरण को रोकने के लिए क्या मंगल ग्रह से बहुमत की आशा है?

• हिंदुओं का धर्म परिवर्तन केवल एक लाइन के कानून से बंद हो सकता है बोलिये क्या बहाना है? बहुमत नहीं है?

• बच्चों की महंगी पढ़ाई के कारण हिन्दू बच्चे पैदा नहीं कर रहे... क्या 56 इंची मोदी जी को सबको पढाई फ्री करने और हमारे देश के एजुकेशन सिस्टम से ईसाईयों का कब्जा हटाने के लिए चाइना से बहुमत चाहिए?

• कांग्रेसियों और वामपंथी लाल बिंदी गैंग ने हिंदुओं के परिवारों को विघटित करने और हिंदुओं में तलाक की संख्या बढ़ाने के लिए जो दहेज डोमेस्टिक वायलेंस और मेंटेनेंस के कानून बनाए थे जिनके कारण बड़ी संख्या में हिंदू परिवार समाप्त हो रहे हैं और हमारी प्रजनन दर कम होती चली जा रही है... उन्हें सुधारने की बजाय, मुस्लिम समाज की कुरीतियों जैसे तीन तलाक को दूर करने के लिए मोदी जी को बहुमत दिया गया था क्या?

• कांग्रेसी तो अपने दंगाई वोटरों को सुरक्षा दिलाने के लिए ताल ठोक कर 'परिलक्षित हिंसा अधिनियम' बना कर ले आये थे... हिंदुओं को हिंदुओं के ही देश में असुरक्षित और डरा-डरा के वोट लेने वाली चाणक्य के ब्रेन वाले मोदी जी की सरकार ने... हिंदुओं को हिंदुओं के ही देश में सुरक्षित महसूस कराने के लिए क्या कदम उठाये? क्या वो कांग्रेसी परिलक्षित हिंसा अधिनियम' जैसा कोई अधिनियम अपने वोटर हिंदुओं की सुरक्षा हेतु बनाने की दम दिखा सकते हैं?

• मोदी जी की सरकार ने मुट्ठी भर साइबर क्रिमिनल्स द्वारा फोन पर बेवकूफ़ बना कर मेहनती लोगों के एकाउंट खाली कर देने से रोकने के लिए क्या पाकिस्तान से बहुमत लाना है? बताओ क्या बहाना है 56 इंची नाकारा मोदी सरकार का और उसके आईटी सेल का?

• हिंदुओं के भगवानों को खुल कर गाली देनेवालों और उनका मजाक बनाने वालों को रोकने के लिए भी क़ानून बनाने के लिए बहुमत नहीं है?

• सेकुलर संविधान में पुजारियों को घंटा और मौलवियों को 15,000-20,000 की तन्खा देने का प्रावधान है? और तुष्टिकरण रोकने के लिए मोदी जी के पास बहुमत नहीं है?

• हिंदुस्तान और हिंदुओं की लाखों वर्ग किलोमीटर जमीन हथियाने वाले और अनाधिकृत कब्जा करने वाले वक्फ बोर्ड को और वक्फ कानूनों को भंग करने के लिए क्या आपको साउथ अफ्रीका से बहुमत मिलने का इंतजार है?

• भैया... दिन में छः बार कपड़े बदल कर फोटोशूट कराने वाले, बांसुरी, मोर और दाढ़ी वाले, मुसलमानों का विश्वास जीतने में लगे मोदी को अब बहू-मत की जगह झोला ला के दो. ताकि जो हिंदू हित की बात करे और हिंदू हित के कार्य करे... वो हमारे देश पे राज करे?

• हिंदुओ... अब तो बस एकजुट होकर योगी को लाने के लिए मेहनत करो, मोदी के लिए की गई मेहनत की भैंस, तो पानी में जाकर मुसलमानों का विश्वास जीत रही है और उनका तृप्ति करण कर रही है?

साप्ताहिक समय माया

मत, दान नहीं करो, मताधिकार का सही उपयोग करो

हर नागरिक निर्वाचक मताधिकारी, मतदान की जगह, हो 'मताधिकार'

अपराधियों, झूठे, मक्कारों के वादों, लालच में उलझ मत दान करने का परिणाम सामने, भूख, बेरोजगारी से देश की बर्बादी

देश का हर नागरिक निर्वाचक ELECTOR है या अपने मत का भिक्षुक को दान करने वाला DONAR

भोपाल। देश भर में चुनाव की गहमागहमी चल रही है। देश के नेता से लेकर नौकरशाह तक करोडों लोग मुहिम में लगे है। इस समय पर एक वरिष्ठ पत्रकार ने एक बड़ा ही सामयिक, प्रासंगिक बल्कि कहिये तो बहुप्रतीक्षित मुद्दा विमर्श के लिए देश के सामने खड़ा किया है। भारत निर्वाचन आयोग को संबोधित पत्र भेजकर एवं जनहित में चिंतन हेतु आलेख लिखकर मांग उठाई है कि 'मतदान' शब्द की जगह 'मताधिकार' और 'मतदाता' शब्द की जगह 'मताधिकारी' का प्रयोग किया जाये। बात में बेहद वजन है, इसलिये मैं इस की इस मांग के समर्थन में हूँ और इसीलिये इस विषय को सोशल मीडिया पर मौजूद अपने सभी मित्रों के विचारण एवं सहभागिता हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ।

दरअसल, बहुधा, केवल अनुवाद की जरा सी गलती बहुत बड़ा फर्क डाल देती है। कभी कभी तो यह गलती जानबूझकर की गई भी प्रतीत होती है। अंग्रेजी में शब्द है-Right to Vote जिसका सीधा सीधा अनुवाद होता है मताधिकार। इसी तरह व्होट का अनुवाद होगा मत देने का अधिकार रखने वाला या मताधिकारी। अब समझ में नहीं आता कि इस मत के साथ 'दान' या 'दाता' कहाँ से और क्यो जोड़ दिया गया,जबकि दान या दाता का अर्थ नितांत भिन्न है। हमारी भारतीय संस्कृति में दान देने और दाता बनने को सर्वश्रेष्ठ कर्म माना गया है। हर कोई दान देने और दाता कहलाने की छुपी हुई इच्छा मन मे रखता है, शायद इसलिए इस गलत अनुवाद को भी स्वीकार कर लिया गया। मत के दाता बनकर हम श्रेष्ठता का अनुभव भले ही कर लें, परंतु, इससे हमारे वास्तविक अधिकार सीमित होते हैं। दान ऐच्छिक होता है। दान दें या न दें, कितना दें, कब दें, किसे दें- ये सब कुछ दाता की इच्छा पर ही निर्भर है। दाता की जिम्मेवारी का भाव इसमे निहित नहीं होता। दूसरी बात यह है कि दान देने के बाद उसको हमेशा भूल जाने की अवधारणा भी हमारी संस्कृति में है। नेकी कर दरिया में डाल। दान लेने वाले ने हमारे दान का क्या उपयोग किया-यह कोई

भी किसी से नहीं पूछता। बल्कि यह पूछना तुच्छता मानी जाती है।

'मत' के साथ 'दान' का भाव जुड़ जाने से राष्ट्र का बड़ा नुकसान हुआ है। क्योकि हम अगंभीर हो गये। दान है, किसी को भी दे दो। मर्जी हो तो दो, मर्जी न हो तो न दो। इसीलिए मर्जी होती है तो वोट डालते हैं, नहीं होती है तो नहीं डालते हैं। डालते भी बगैर सोचे समझे किसी के भी पक्ष में डाल आते हैं, क्योंकि दान लेने वाले की पात्रता देखने की परंपरा ही नहीं है, हमारे यहाँ। फिर मत का दान करने के बाद हम कभी पलट कर ही नहीं देखते कि दान लेकर गया आदमी हमारे दान का क्या उपयोग कर रहा है, क्योंकि ऐसा करना हमारी संस्कृति में वर्जित है। अब हम जरा देखें कि मतदान की जगह मताधिकार, मतदाता की जगह मताधिकारी और मतदान केंद्र की जगह मताधिकार केंद्र कर देने से क्या फर्क पड़ेगा। अधिकार का भाव व्यक्ति को सजग बनाता है। अधिकार का भाव शक्ति सम्पन्न होने का अहसास कराता है। अधिकार का प्रयोग करने के बाद उसके परिणाम देखने और परिणाम अनुकूल नहीं होने पर परिवर्तन करने का भी प्रावधान उसी में अंतर्निहित होता है। केवल दान की जगह अधिकार कर देने मात्र से ही मतदान के प्रति हमारा पूरा नजरिया ही बदल जायेगा।

मतदान ऐच्छिक है, मताधिकार अनिवार्यता की ओर ले जायेगा। मतदान चिंतन नहीं मांगता, मताधिकार चिंतन मांगेगा। अधिकार का प्रयोग करने के बाद उसके परिणामों की समीक्षा करने का भाव उत्पन्न होगा। और सबसे बड़ी बात यह कि हमेशा दूसरे अधिकारियों को झेलने वाले हम आम नागरिक कम से कम एक दिन के लिए स्वयं अधिकारी बनेंगे।

'voter' और 'Doner' में फ़र्क होता है, जैसे नासमझ 'मतदाता' समझदार 'मताधिकारी'

हमारे देश में विधान सभा एवं लोक सभा चुनाव की गहमागहमी हो रही है वोटिन्ग करने की अपील सारी पार्टिया कर रही हैं , वैसे तो गणतंत्र दिवस के एक दिन पहले 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' के नाम से एक सरकारी पर्व भी 25 जनवरी को हर साल मनाए जाने की रस्म अदा की जाती है। यह क्यों मनाया जाता है? इस बहस में अभी नहीं जाना है, लेकिन बीते 70 वर्षों में हमारे देश में 'वोटर्स डे' अभी तक नहीं मनाया गया है। हालांकि कभी-कभी चुनाव से पहले 'राष्ट्रीय मतदाता जागरूकता अभियान' भी निर्वाचन आयोग के माध्यम से चलाया जाता है। तो बात यह है कि आग़ामी चुनाव के परिणाम आने के बाद फिर सरकार बनेगी,

(शेष पेज 6 पर)

चुनावी महोत्सव से करोड़ों की कमाई

जिलाधीश परिवहन भत्ते निर्माण अन्य व्यय कर जाते हैं हजम

देश में लोकसभा विधान सभा के साथ नगर निगम पालिकाओं से पंचायतों तक के चुनाव भाई के लिए मोटी कमाई का साधन होते हैं। सभी चुनावों की तैयारियां साल भर पहले से शुरू हो जाती हैं। जिसमें मतदाता सूची को आध्यतन करना, नाम जोड़ना हटाना सही पते ढूंढना आदि का कार्य सभी विभागों के सरकारी कर्मचारियों, शिक्षकों, स्वास्थ्य महिला बाल विकास आदि विभागों की कार्यकर्ताओं को इन कार्यों में झोंक दिया जाता है। जिसके प्रतिदिन के भत्ते, यात्रा व्यय आदि का भुगतान चुनाव आयोग से पूरा मिलता है जो मुश्किल से ही बीएलओ का काम करने वालों को काफी हल्ला मचाने के बाद भी आधा अधूरा मिलता है। निगम पालिकाओं के साथ लोक निर्माण विभाग को हर मतदान केंद्र पर मतदाताओं की सुविधा के लिए पीने का पानी, छायादार बैठने का स्थान, मूत्रालय आदि की व्यवस्था, विकलांगों के लिए ढालदार पट्टी के निर्माण की व्यवस्था, जो हर मतदान केंद्र पर होनी चाहिए के साथ ही जो पीठासीन कर्मचारी अधिकारी वहां तो वक्त चुनाव करवाने जाते हैं उनके लिए रहने खाने एक रात सोने आदि की व्यवस्था भी चुनाव आयोग की धन से की जाती है। जो हर मतदान केंद्र पर लाखों में होती है। इसके साथ ही चुनावी सभाओं में मंत्री मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री के आने पर उनकी सुरक्षा, वेरीकेडिंग, हेलीपैड भोजन पानी की व्यवस्थाभी क्षेत्रीय प्रशासन चुनाव आयोग के धन से ही करता है। जबकि जिस राजनीतिक दल काजो भी मंत्रीमुख्यमंत्री प्रधानमंत्री आ रहा है। उसकी सारी सुरक्षा व्यवस्था से लेकर हेलीपैड बैरिकेटिंग आने जाने के मार्गों पर सुरक्षा बैरिकेटिंग की व्यवस्था संबंधित दलों को स्वयं करनी चाहिए जब वह राजनीतिक चुनावी यात्रा पर आ रहा है। तो उसमें शासकीय धन साधनोंं का दुरुपयोग क्यों किया जाता है इसके ऊपर भी जनता को आवाज उठानी चाहिए। बेशक सत्ताधीश राजनीतिक दल ने पैसा तो जनता का ही लूटकर इकट्ठा कर खर्च करती है।

जबकि इस प्रकार व मद का सारा धन जिसका उपयोग और संबंधित सारी व्यवस्था करने के लिए जिलाधीश को व उसके माध्यम से लोक निर्माण विभाग के संबंधित संभाग के कार्यपालन यंत्री व निगमों के आयुक्त, पालिकाओं परिषदों व उसके निर्माण के इंजीनियर आदि मिलाकर 90% पैसा हजम कर जाते हैं। जो करोड़ों में होता है।

इसके साथी जितने अधिकारी कर्मचारीजो अन्य कार्यों मेंवाहनों का उपयोग करते हैं। उन सारे वाहनों को टैक्सी पर लेना दिखाकर सबके फर्जी बिल जिला व क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी उन सैकड़ो वाहनों के किराए का बिल जो करोड़ों में होता है जिलाधीश और परिवार अधिकारी मिलकर हर चुनावी महोत्सव में हजम कर जाते हैं। साथ ही इनका ड्राइवर कंडक्टर आदि के भोजन पानी भत्ते के साथ डीजल पेट्रोल व अन्य खर्च के भी बिल लगाकरकरोड़ों रुपए हजम किया जाता हैइसके दूसरी तरफ इसका सच यह भी है कि जिन विभागों के अधिकारी कर्मचारी पुलिस सेक्टर ऑफिसर निगरानी चेकपोस्ट जांच अधिकारी आदि के अधिकांश वाहन संबंधित विभाग के कर्मचारी अधिकारी विभाग से ही लेते हैं और विभाग का पैसा पेट्रोल डीजल में खर्च होना दिखाकर वह सब भी उसे पैसों को हजम करने में परिवहन अधिकारी व जिलाधीश निर्वाचन शाखा मिलकर हजम कर जाते हैं आखिर हर वर्ष हर जिले में होने वाले इस करोड़ों रुपए की भ्रष्टाचार के बारे मेंकभी जिलाधीश परिवहन अधिकारी निर्वाचन शाखा प्रभारी और हजम करने वालों और फर्जी बिल पास करने वालों कोआर्थिक अन्वेषण ब्यूरो और लोकायुक्त की जांच में क्यों नहीं लाया जाता। अधिकांश संबंधित अधिकारियों कर्मचारियों से बात करने पर मालूम पड़ता है कि उस विभाग, मंडल के अधिकांश वाहन जिलाधीश ने हीं डरा धमका अपने पास चुनाव कार्यो की आड़ में संलग्न कर लिए हैं। जिससे संबंधित विभाग के कर्मचारी अधिकारी नियमित कार्यों को संपन्न करने में अत्यधिक परेशानी झेलने के लिए मजबूर होते हैं। जबकि अधिकांश विभागों में आवंटित वहां टैक्सियां सरकार ने संबंधित अधिकारियों को मौज मस्ती के लिए नहीं। सरकारी कार्यों को संपन्न करने साइट पर जाने आने निर्माण मरम्मत कार्यों की देखरेख करने संबंधित क्षेत्र में गस्त लगाने आदि के लिए दिए होते हैं परंतु कलेक्टर अपने अधिकारों का अति प्रयोग करके अधिकांश विभागों के वाहनों को दांत जपत से चुनावी कार्यों में संलग्न कर शासकीय अन्य विभागों के कार्यों को लंबित करवाने बिगड़ने बर्बाद करने उल्टा सीधा काम करने में जांच गस्त के अभाव में महती भूमिका निभाते हैं। जबकि नियमानुसार चुनाव आयोग ऐसे सभी चुनावी कार्यों के लिए किराए पर वाहन लेने का धन और सुविधा उपलब्ध करवाता है। जिसे घोर भ्रष्ट जालसाज भारतीय प्रताड़ना सेवा अधिकारी आसानी से करोड़ों में हजम कर जाते हैं। चुनाव की घोषणा से लेकर चुनाव की गिनती तक आने वाला लगभग रु. 1 अब से ज्यादा जो विभिन्न कार्यों कर्मचारियों के वेतन भत्ते भोजन पानी आदि के लिए आवंटित किया जाता है। आसानी से 80% तक फर्जी बिल वाउचर आवंटन वितरण दिखाकर डकार लिया जाता है। चुनाव के समय जिलाधीश परिवहन कार्यालय कार्पल मंत्री लोक निर्माण विभाग निगम आयुक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत पालिका परिषद निर्वाचन अधिकारी जिले का निर्वाचन प्रभारी से लेकरसंबंधित विभागों के कर्मचारी अधिकारी नियम कानून को ताक में रखकर तबीयत से सभी प्रकार की सभाओं में चाय पानी नास्ते के खर्चो से लेकर मतदाता की उंगली पर लगाने वाली स्याही खरीदने के कई गुना ज्यादा के फर्जी बिलों मैं फर्जीवाड़ा, मतदान केंद्रों पर फर्नीचर टेंट तंबू लगाने की व्यवस्था करने, मतदान केंद्र पर पहुंचने के लिए बसों की व्यवस्था, करने में घोर भ्रष्ट डकैत परिवहन अधिकारी अधिकांश सार्वजनिक मार्गों पर चलने वाली, स्कूल कॉलेज की निजी व सरकारी बसों को चुनावी एकार्यों के नाम से तीन से चार दिन के लिए संलग्न कर अधिकांश बसों के मालिकों को डरा धमकाकर आधा अधूरा भुगतान कर पूरे के बिल लगाकर भी हजम कर जाते है।

चुनाव के वोटो की गिनती करने और उस दिन तक के लाखों के खर्च हुई करोड़ों में दिखाकर वसूली कर हजम की जाती है। इस लेख मे प्रस्तुत तथ्यों की सत्यता को जांचने के लिए इन हरामखोर जालसाज डकैत निर्वाचन अधिकारी एडीएम एसडीएम जिला व क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, कार्यपालन, सहायक व उपयंत्रियों लोकनिर्माण विभाग, निगमों उप सहायक आयुक्तों, पालिकाओं, परिषदों के मुख्य कार्य पालन अधिकारियों इंजीनियरों आलू की केबलपुराने 3 महीने के सभी मोबाइल टेलीफोन पर की गई बातों के टेप निकाल सच्चाई की पुष्टि की जा सकती है। और मालूम किया जा सकता है कि कौन भ्रष्टाचार से चुनावी महोत्सव में कितना पैसा हजम कर गया?

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- अजमेरा एस.पी. कुमार द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13 प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 299, अम्बेडकर नगर, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
भोपाल प्रतिनिधि- एस.के. भारद्वाज मो. 9074551045, इंदौर कार्यालय- 0731-2530859, मोबा. 9300755803